

GOVERNMENT OF TAMIL NADU

Hindi Reader

हिन्दी रीडर

STANDARD - VIII

आठवीं कक्षा

Department Of School Education

Untouchability is Inhuman and a Crime

8th STD Hindi Book.indb 1 18-03-2019 17:34:04

Government of Tamil Nadu

First Edition - 2019

Reprint - 2020, 2021, 2022,

2023, 2024

(Published under New Syllabus)

Content Creation

State Council of Educational Research and Training

© SCERT 2019

Printing & Publishing

Tamil NaduTextbook and Educational Services Corporation

www.textbooksonline.tn.nic.in

Preface.indd 2 28-01-2019 10:11:54

प्रस्तावना

नई सोच, नई आशाओं के साथ पुस्तक वर्ग ३, वर्ग ४, वर्ग ५ और वर्ग ८ का सृजन किया गया है।

आगे के प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष के वातावरण में बच्चों का सम्यक शारीरिक एवं मानसिक विकास बहुत आवश्यक है ताकि वे भविष्य में आनेवाली चुनौतियों का मुकाबला आसानी से कर सकें। उनके लिए ज्ञान विज्ञान की बातें उतनी ही आवश्यक है जितनी साहित्य और कला संबंधी जानकारी देश विदेश में हो रही घटनाओं से परिचित होना अगर आवश्यक है तो जीवन जीने की व्यावहारिक कला में निपुण होना भी उतना ही आवश्यक है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही इस श्रृंखला का सृजन किया गया है। छात्र छात्राओं का सर्वांगीण करना है।

श्रृंखला तैयार करते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है।

- पाठों की प्रस्तुति के लिए विधा , कौतूहल और भाषा की सरलता आवश्यक है, यही समझते हुए ऐसे पाठों का चयन किया गया है जो बच्चे की जिज्ञासाओं एवं रूचियों को बढावा दे सके। साहित्य की विभिन्न विधाओं से अवगत कराने हेतु कविताएँ, कहानियाँ, लेख, यात्रा वृत्तांत, हास्य कथा, एकांकी, साक्षात्कार, आत्मकथा, डायरी आदि को सम्मिलित किया गया है।
- पर्यावरण संरक्षण आज के युग की सबसे बडी माँग है। बच्चों को प्राथमिक कक्षाओं से ही पर्यावरण की समस्याओं एवं उसके संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के लिए पर्यावरण संबंधी कहानियों एवं कविताओं के साथ साथ समाचार पत्रों में छपे लेख, पोस्टर आदि को भी सम्मिलित किया गया है।
- बच्चों को पुस्तक के केंद्र में रखने के कारण ऐसे पाठों को ही चुना गया ताकि खेल खेल में, मनोरंजन करते हुए अपनी बात बच्चों तक पहुँचा सकें। कक्षा का वातावरण बोझिल न हो, इसलिए रूचिकर पाठों के साथ साथ चुटकुले, शब्द पहेली, चित्रकथाएँ आदि भी दिए गए है।
- समालोचनात्मक सोच, समस्या समाधान, प्रभावशाली संप्रेषण तथा रचनात्मक प्रवृत्ति जैसे कौशलों का विकास करने वाले कार्यकलापों को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है।
- भाषा ज्ञान के अंतर्गत व्याकरण को सम्मिलित कर लिया गया है ताकि वह अलग अलग न होकर उसके साथ जुडा रहे।
- मौखिक वार्तालाप, लिखित कार्य, समूह कार्य, संवाद प्रदर्शन आदि को ध्यान में रखते हुए अभ्यासों का निर्माण किया गया है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन करते समय इस विविधता को ध्यान में रखा जाए। मूल्यांकन करते समय प्रश्न कल्पनाशीलता को उभारें, विषयवस्तु को विस्तार प्रदान करने वाले हों, पाठ्यपुस्तक की परिधि से बाहर वृहतर परिधि को समेटने वाले हों, इन सभी बिंदुओं को ध्यान में रखकर ही अभ्यास में सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश किया गया है।

सीखने के वातावरण को आनंदमयी बनाए रखना अध्यापकों की बहुत बडी जिम्मेदारी है। कक्षा में विद्यार्थियों के संप्रेषण को महत्व दें। बच्चे अपनी बात बोलते समय न हिचकें। उन्हें बोलते अथवा लिखाते समय जो भी सहायता चाहिए, प्रदान करे ।

बच्चों के मनोविज्ञान, उनके मानसिक क्षितिज को समझते हुए, उनके जगत से तारतम्य बनाते हुए हमारी ओर से प्रयास है।

8th STD Hindi Book.indb 4 18-03-2019 17:34:04

देशीयगीतम्

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा
द्राविड उत्कल बङ्गा
विन्ध्य हिमाचल यमुना गङ्गा
उच्छल जलधि तरङ्गा
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मङ्गल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे !

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरः

अस्पृश्यत्वम् अपचारः
अस्पृश्यत्वम् अपराधः
अस्पृश्यत्वम् अमानवधर्मः



Preface.indd 5 28-01-2019 10:22:39

तमिल माता की वंदना
(तमिलताय वाळ्तु)

नीरारूम कडलुडुत्त निलमडन्दै केळिलोळुगुम
सीरारूम वदनमेन तिगळ भारत खंडमिदिल,
तेक्कण।मुम अदिर्चिरन्द द्राविडनल् तिरूनाडुम
तक्कचिरू पिरैनुदलुम तरित्तनरून्तिलकमुमे
अत्तिलक वासनैपोल अनैत्तुलगुम इन्बमुर
ऍत्तिशैयुम पुगळ मण।क्क इरून्द पेरूंद् तमिलअणंगे!
तमिलअणंगे!
उन सीर इलमै तिरम वियन्दु सेयलमरन्दु वाळ्त्तुदुमे!
वाळ्त्तुदुमे!
वाळ्त्तुदुमे!

'मनोनमणि।यम' पे. सुन्दरम पिल्लै

8th STD Hindi Book.indb 7 18-03-2019 17:34:05



राष्ट्रिय प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है।

सब भारतवासी मेरे भाई-बहन है।

मैं अपने देश से प्रेम करता/करती हूँ।

इसकी समृद्ध एवं विविध संस्कृति पर मुझे गर्व है।

मैं सदा इसका सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न करता/करती रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने माता-पिता, शिक्षको एवं गुरुजनो का सम्मान करूँगा/करूँगी और प्रत्येक के साथ विनीत रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने देश और देशवासियों के प्रति सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा करता/करती हूँ।

इनके कल्याण एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।



8th STD Hindi Book.indb 8 18-03-2019 17:34:05

विषय सूची

1. कबीर के दोहे	01
2. तुलसी की पदावली	04
3. रहीम के दोहे	06
4. तब याद तुम्हारी आती है	09
5. वह मातृ भूमि मेरी	12
6. ऐ मालिक तेरे बन्दे हम	14
7. प्रभु मेरे मन की जाने	17
8. बादल	20
9. छोटी-सी हमारी नदी	23
10. हमारी संसद	26
11. न्याय का घंटा	30
12. दक्षिण की पुरानी नाट्य कलाएँ	37
13. शास्त्रीजी की महानता	43
14. अक्षरों का महत्व	46
15. वी.ओ. चिदम्बरम पिल्लै	50
16. मन चंगा तो कठौती में गंगा	54
17. त्याग का सुख	58
18. कुत्ते की पूँछ	61
19. कलई खुल गयी	63
20. धन की महिमा	65

8th STD Hindi Book.indb 9 18-03-2019 17:34:05

21. निबन्ध 68

22. व्याकरण भाग – वाक्य रचना 72

23. संयुक्त क्रियाएँ 73

24. 'जो का प्रयोग' 75

25. मिश्र वाक्य 77

26. संयुक्त वाक्य 79

27. 'चाह' का प्रयोग 81

28. कर – पूर्वकालिक कृदंत का प्रयोग 83

29. 'सक' का प्रयोग 85

30. चुक का प्रयोग 87

31. गिनती 88

32. हिन्दी महीने 90

33. मुहावरे 91

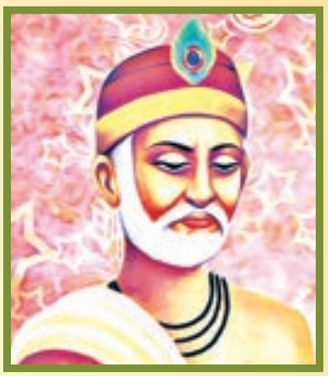
34 भिन्नार्थी शब्द 92

35. पत्र 93

36. प्रमुख कवियों का परिचय 96

8th STD Hindi Book.indb 10 18-03-2019 17:34:05

पद्य 1 कबीर के दोहे



1. नाम रतन धन पाईके । गाँठी बाँध न खोल ।
   नाहीं पन नहिं पारखू । नहिं गाहक नहिं मोल ।।

भावार्थः – कबीर कहते हैं – ब्रह्म का नाम रत्न है । उस रत्न रूपी धन को प्राप्तकर तू उसे अपनी गाँठ में बाँध ले, उसे बार बार मत खोल । उनके लिए न तो कोई बाज़ार है, न उसका कोई परीक्षक और ग्राहक हैं तथा उसका मोल तो हो ही नहीं सकता।

2. जल ज्यों प्यारा माछरी, लोभी प्यारा दाम ।
   माता-प्यारा बालका, भक्त पियारा नाम ।।

भावार्थ – कबीर कहते हैं – जिस प्रकार मछली को जल, लोभी को दाम और माता को बालक प्रिय लगता है, उसी प्रकार भक्त को भगवान का नाम ही प्रिय लगता है ।

3. अति का भला न बोलना, अति का भला न चूप ।
   अति का भला न बरसना । अति की भली न धूप ।।

भावार्थ – कबीर कहते हैं – न तो अधिक बोलना अच्छा है और न अधिक चुप रहना। न अधिक वर्षा अच्छा है और न अधिक चिलचिलाती धूप ही अच्छी हैं । आवश्यकता से ज्यादा जो भी हो अच्छा नहीं है। अमृत भी अधिक होने पर विष समान हो जाता है ।

4. कहता तो बहुता मिला, गहती मिला न कोई ।
   सो कहता गहि जान दे, जो नहीं गहता होई ।

भावार्थ – कबीर कहते हैं – मुझे इस संसार में बातें बोलनेवाले तो बहुत मिले, पर उन बातों को अमल में लानेवाला कोई नहीं मिला । इसलिए जो कहकर तदनुसार आचरण नहीं करता उसकी मित्रता सही नहीं है। हमें वचन

8th STD Hindi Book.indb 1 18-03-2019 17:34:05

पालक को दोस्त बनाना चाहिए।

5. धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय ।

माली सींचे सौ घडा, ऋतु आए फल होय ।।

भावार्थ – कबीर अपने मन को सावधान करते हुए कहते है धीरे-धीरे करने से ही सारे कार्य सफ़ल होंगे जलद-बाजी से कुछ नहीं होगा । जैसे एक साथ माली पेडों पर सौ घड़ा पानी देने पर भी समय आने पर ही यानी मौसम में ही फल देगा, तुरन्त नहीं इसलिए समयानुसार चलना सीखना चाहिए ।

अभ्यास

I. कठिन शब्दार्थ

1. पाइकै - पाकर
2. गाहक - ग्राहक
3. पारखू - परीक्षक
4. मछरीं - मछली
5. मना - मन
6. माली - भगवान
7. सींचै - पानी देना
8. ऋतु – मौसम
9. गहती - अमल

II. उचित शब्द चुनकर खाली जगह भरिए –

1. _____ अपनी गाँठ में बाँध लो ।

   1. हीरा 2. स्वर्ण 3. ब्रह्म का नाम

2. लोभी के लिए प्यारा है _____

   1. माँ 2. दोस्त 3. धन

3. भक्त को प्यारा है _____

   1. मंदिर जाना 2. प्रसाद खाना 3. भगवान का नाम

4. अधिक बोलना _____ है

   1. बुरा 2. वश में करना 3. अच्छा

8th STD Hindi Book.indb 2 18-03-2019 17:34:05

5. अधिक वर्षा _____ है।

1. लाभ 2. नुकसान 3. समृद्धि

6. कहने वाले _____ मिलते हैं।

1. काम 2. अधिक 3. कोई भी नहीं

7. हमें वचन पालक को _____ बनाना है।

1. प्यार 2. नफ़रत 3. दोस्त

III. प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

1. कबीर मन को संबोधित कर क्या कहते हैं ?

2. फल हमें कब मिलता हैं?

IV. कबीर के दोहों को कंठस्थ कीजिए।

V. कबीर के पाँच दोहों की व्याख्या कीजिए।

8th STD Hindi Book.indb 3 18-03-2019 17:34:05

पद्य 2 तुलसी की पदावली



तू दयालु, दीन हौं , तू दानि , हौं भिखारी।
हौं प्रसिद्ध पातकी, तू पाप-पुंज-हारी ।।

नाथ तू अनाथ को, अनाथ कौन मोसो ।
मो समान आरत नहिं, आरतिहर तोसो ।।

ब्रह्म तू ,हौं जीव, तू है ठाकुर, हौं चेरो ।
तात -मात, गुर -सखा, तू सब बिधि हितू मेरो ।।

तोहिं मोहिं नाते अनेक, मानियै जो भावै।
ज्यों त्यों तुलसी कृपालु! चरन-सरन पावै ।।

8th STD Hindi Book.indb 4 18-03-2019 17:34:05

अभ्यास

I. कठिन शब्दार्थ

1. आरत - दुखी 2. ठाकुर - भगवान

II. उचित शब्द चुनकर खाली जगह भरिए –

1. _____ दयालु हैं ।

   1. राजा 2. गुरु 3. भगवान

2. हमारे माता-पिता _____ सखा ईश्वर हैं।

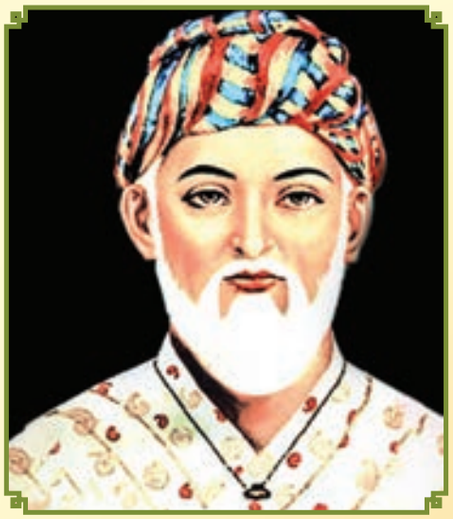
   1. भाई 2. बहन 3. गुरु

III. तुलसी की पदावली कंठस्थ कीजिए ।

IV. तुलसी की पदावली का भाव समझाइए ।

8th STD Hindi Book.indb 5 18-03-2019 17:34:05

पद्य 3 रहीम के दोहे



1. रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय ।
   टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय ।।

रहीम कहते हैं कि प्रेम का धागा नाजुक होता है। इसे झटका देखर तोडना उचित नहीं होता, यदि यह प्रेम का धागा एक बार टूट जाता है तो फिर इसे जोड़ना कठिन होता है और यदि जुड़ भी जाए तो भी टूटे हुए धागों के बीच में गाँठ पड़ जाती है। जो देखने में अच्छा नहीं लगता है।

2. रहिमन निज संपति बिना, कोउ न बिपति सहाय ।
   बिनु पानी ज्यों जलज को, नहिं रवि सकै बचाय ।।

रहीम कहते है कि निज संपत्ति ही विपत्ति में काम आती है न की दूसरों की। उसी प्रकार पानी ही जलज यानी कमल को बचा सकता है न की सूरज। इसलिए अपनी संपत्ति को बचाकर रखिए ताकि भविष्य में काम आएगा ।

3. धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पियत अघाय।
   उदधि बड़ाई कौन कहे, जगत् पियासो जाय ॥

रहीम कहते हैं कि कीचड़ का जल धनी है। क्योंकि कीचड के जल से कितने ही लघु जीवों का प्यास बुझता हैं। सागर का जल अधिक होने पर भी पीने योग्य नहीं हैं। संसार के लोग उसके किनारे होकर भी प्यासे के प्यासे ही रह जाते हैं। मतलब यह कि महान वही है जो किसी के काम आए ।

4. एक साधे सब साधै, सब साधे सब जाय ।
   रहिमन मूलहि सींचबों, फूलहि फलहि अघाय ।।

8th STD Hindi Book.indb 6 18-03-2019 17:34:05

रहीम कहते है कि एक की साधना से सब कुछ बनता है । अनेक की साधना से सब कुछ बिगड़ता है । जिस प्रकार मूल को जल देने से पेड़-फल देता है। उसी प्रकार साधना किसी एक की करने से यानी किसी एक पर विश्वास करने से सारे काम अच्छे होंगे।



I. कठिन शब्दार्थ

1. धागा – सूत 2. जुरे – जुडे 3. गाँठ परि – मन-मुटाव होना
4. जलज – कमल 5. पंक – कीचड 6. साधना – ध्यान
7. अधाय – अधिक

II. उचित शब्द चुनकर खाली जगह भरिए –

1. प्रेम का धागा तोडने पर क्या होती है?
2. मनुष्य को सहायक कब मिलेंगे ?
3. कमल को कौन बचा सकता है?
4. किसकी संपति विपत्ति में काम आती है?
5. समुद्र के जल से पंक का जल क्यों महत्वपूर्ण है ?
6. मनुष्य को अपने कार्य की साधना में सफलता किस प्रकार प्राप्त होती है?

III. उचित शब्द चुनकर खाली जगह भरिए –

1. प्रेम का धागा टूट जाने पर _____ सकता है ।

1. जुड 2. जुड नहीं 3. लाभ हो

2. विपत्ति में हमारा सहायक _____ है।

1. अपनी संपत्ति 2. दोस्त की संपत्ति 3. दूसरों की संपत्ति

8th STD Hindi Book.indb 7 18-03-2019 17:34:06

3. प्यास बुझाने में _____ काम आता है ।

1. समुद्र 2. पंक 3. जल

4. कार्य की सफलता के लिए _____ लगना है।

1. एक ही कार्य में 2. बहु कार्य में 3. अलग-अलग कार्य में

IV. रहीम के दोहों को कंठस्थ कीजिए ।

V. रहीम के दोहों की व्याख्या कीजिए ।

8th STD Hindi Book.indb 8 18-03-2019 17:34:06

पद्य 4 तब याद तुम्हारी आती है !



जब बहुत सुबह चिड़ियाँ उठकर
कुछ गीत खुशी के गाती है,
कलियाँ दरवाज़े खोल-खोल
जब दुनिया पर मुसकाती हैं,
खुशबू की लहरें जब घर से
बाहर आ दौड़ लगाती हैं,
हे जग के सिरजनहार प्रभो,
तब याद तुम्हारी आती हैं ।

जब छम-छम बूँदें गिरती हैं,
बिजली चम-चम कर जाती हैं,
मैदानों में, बन-बागों में
जब हरियाली लहराती हैं,

जब ठंडी-ठंडी हवा कहीं से
मस्ती ढोकर लाती हैं,
हे जग के सिरजनहार प्रभो,
तब याद तुम्हारी आती हैं।

हम देख रहे हैं, नदी रात-दिन
हरदम बहती जाती है,
जाडा-गरमी, ऊँचा-नीचा
सब कुछ वह सहती जाती है,
हम सुनते नहीं, समझते हैं,

8th STD Hindi Book.indb 9 18-03-2019 17:34:06

वह जो कुछ कहती जाती हैं,
हे जग के सिरजानहार प्रभु!
तब याद तुम्हारी आती है ।

तारों की महफिल जब रात सजाती है,
जब चाँद शान से उठता है,
दिल की दुनिया जग जाती हैं
कुछ पता नहीं लेकिन जरूर
वह हमें कुछ बताती है,
हे जग के सिरजनहार प्रभु!
तब याद तुम्हारी आती हैं ।

- रामनरेश त्रिपाठी

अभ्यास

I. कठिन शब्दार्थ

1. खुशबू - सुगंध
2. सिरजनहार - सृष्टिकर्ता
3. याद - स्मरण

II. कविता का कंठस्थ कीजिए ।

III. उचित शब्द चुनकर खाली जगह भरिए –

1. _____ बाहर दौड लगाती हैं ।

1. बछडा
2. बालक
3. खुशबू की लहरें

2. चिडिया उठकर _____ गाती हैं ।

1. शोक गीत
2. कर्णकठोर गीत
3. खुशी के गीत

8th STD Hindi Book.indb 10 18-03-2019 17:34:06

3. _____ चम-चम कर जाती हैं।

1. बिजली 2. जुगुनु 3. दीप

4. नदी _____ सह जाती हैं ।

1. कूडा-कचरा 2. गंदे पानी 3. जाडा -गरमी

5. तारों की _____ सजाती हैं ।

1. ग्रहों को 2. दिन को 3. महफिल

IV. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. कवि को चिडिय़ों के गीत सुनकर किसकी याद आती हैं?
2. धरती पर कब हरियाली छा जाती है?
3. रात को कौन महफिल सजाते हैं?
4. क्या-क्या सहकर नदी रात-दिन बहती रहती हैं ?
5. कब दिल की दुनिया जग जाती हैं ?
6. कवि को किन-किन को देखकर भगवान की याद आती हैं?

V. व्याख्या कीजिए –

1. जब छम-छम बूँदें गिरती हैं,
बिजली चम-चम कर जाती हैं,
मैदानों में, बन-बागों में
जब हरियाली लहराती हैं,
जब ठंडी-ठंडी हवा कहीं से
मस्ती ढोकर लाती हैं,
हे जग के सिरजनहार प्रभो,

2. तारों की महफिल जब रात सजाती है,
जब चाँद शान से उठता है,
दिल की दुनिया जग जाती हैं
कुछ पता नहीं लेकिन जरूर
वह हमें कुछ बताती है,
हे जग के सिरजनहार प्रभु!
तब याद तुम्हारी आती हैं ।

8th STD Hindi Book.indb 11 18-03-2019 17:34:06

पद्य 5 वह मातृ भूमि मेरी !



ऊँचा खड़ा हिमालय आकाश चूमता है
नीचे पखार पग तल, नित सिंधु झूमता है,
गंगा पवित्र यमुना, नदियाँ लहर रही हैं
पल-पल नई छटाएँ, पग पग छहर रही हैं।

वह पुण्यभूमि मेरी
वह जन्मभूमि मेरी,
वह स्वर्णभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी।

झरने अनेक झरते, जिसकी पहाड़ियों में
चिड़ियाँ चहक रही हैं, हो मस्त झाड़ियों में,
अमराइयाँ घनी हैं, कोयल पुकारती है
बहती मलय पवन है, तन मन सँवारती है।

वह धर्मभूमि मेरी
वह कर्मभूमि मेरी,
वह जन्मभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी

जन्में जहाँ थे रघुपति, जन्मीं जहाँ थीं सीता,
श्रीकृष्ण ने सुनाई वंशी पुनीत गीता,
गौतम ने जन्म लेकर, जिसका सुयश बढ़ाया
जग को दया सिखाई, जग को दिया दिखाया।

8th STD Hindi Book.indb 12 18-03-2019 17:34:06

वह युद्धभूमि मेरी
वह बुद्धभूमि मेरी,
वह जन्मभूमि मेरी
वह मातृभूमि मेरी!

- सोहनलाल द्विवेदी

अभ्यास

I. खाली जगह भरिए –

1. ' वह मातृ भूमि मेरी ' कविता के कवि_____ हैं ।

   1. मैथिली शरण गुप्त 2. महा देवी वर्मा 3. श्री सोहनलाल द्विवेदी

2. हमारे देश में चरण तले _____ झूमता है ।

   1. नदी 2. मोर 3. सिंधु

3. _____ पवन बहती है।

   1. लू 2. ठंड 3. मलय

4. _____ ने जन्म लेकर सुयश बढाया था ।

   1. गौतम 2. मनु 3. सीता

5. भारत ने जग को _____ सिखायी ।

   1. हिंसा 2. निर्दयता 3. दया

6. यहाँ कृष्ण ने _____ बजायी ।

   1. वीणा 2. डमरू 3. बाँसुरी

II. वह मातृ भूमि मेरी ! कविता का सारांश लिखिए ।

8th STD Hindi Book.indb 13 18-03-2019 17:34:06

पद्य 6 ऐ मालिक तेरे बन्दे हम



ऐ मालिक तेरे बंदे हम,
ऐसे हो हमारे करम
नेकी पर चले, और बदी से टले,
ताकी हँसते हुये निकले दम . . .

ये अंधेरा घना छा रहा, तेरा इन्सान घबरा रहा
हो रहा बेख़बर, कुछ ना आता नज़र,
सुख का सूरज छुपा जा रहा
हैं तेरी रोशनी में जो दम,
तो अमावस को कर दे पूनम
नेकी पर चले, और बदी से टले,
ताकी हँसते हुये निकले दम.....

जब जुल्मों का हो सामना, तब तू ही हमें थमना
वो बुराई करे हम भलाई भरे
नहीं बदले की हो कामना
बढ़ उठे प्यार का हर कदम और मिटे बैर का ये भरम
नेकी पर चलें और बदी से टलें
ताकि हँसते हुए निकले दम.....

बड़ा कमजोर हैं आदमी, अभी लाखों हैं इस में कमी
पर तू जो खड़ा, हैं दयालू बड़ा,
तेरी क्रिपा से धरती थमी
दिया तूने हमें जब जनम,

8th STD Hindi Book.indb 14 18-03-2019 17:34:06

तू ही झेलेगा हम सब के गम
नेकी पर चले, और बदी से टले,
ताकी हँसते हुये निकले दम।

- श्री भरत व्यास

अभ्यास

I. कठिन शब्दार्थ

1. बंदे – भक्त
2. नेकी – ईमानदारी
3. नज़र – दृष्टि
4. पूनम – पूर्णिमा
5. जुल्म – अत्याचार
6. धरती – भूमि
7. गम – दुख

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. हम किसके बंदे है?
2. कवि भगवान से क्या माँगता है?
3. हमारे प्राण कैसे छूटना चाहिए?

III. उचित शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए –

1. हम _____ बंदे हैं ।
   1. ईश्वर के 2. मालिक के 3. माँ-बाप के
2. हमें _____ चलना है ।
   1. नेकी पर 2. बदी पर
3. _____ का सूरज छुपा जा रहा है ।
   1. दुख 2. निराशा 3. सुख
4. हमें _____ सामना करने की शक्ति चाहिए ।
   1. जुल्मों का 2. सत्य का 3. दुष्टों का

8th STD Hindi Book.indb 15 18-03-2019 17:34:06

5. हमारे दुखों को दूर करनेवाला _____ है ।

1. दोस्त 2. भगवान 3. मालिक

IV. व्याख्या कीजिए –

1. बड़ा कमजोर हैं आदमी, अभी लाखों हैं इस में कमी

   पर तू जो खड़ा, हैं दयालू बड़ा,

   तेरी क्रिपा से धरती थमी

   दिया तूने हमें जब जनम,

   तू ही झेलेगा हम सब के गम

   नेकी पर चले, और बदी से टले,

   ताकी हँसते हुये निकले दम।

8th STD Hindi Book.indb 16 18-03-2019 17:34:06

पद्य 7 प्रभु मेरे मन की जाने



मैं अछूत हूँ, मंदिर में आने का मुझको अधिकार नहीं है।
किंतु देवता यह न समझना,
तुम पर मेरा प्यार नहीं है॥
प्यार असीम, अमिट है,

फिर भी पास तुम्हारे आ न सकूँगी।
यह अपनी छोटी सी पूजा,
चरणों तक पहुँचा न सकूँगी।
इसीलिए इस अंधकार में,

मैं छिपती-छिपती आई हूँ।
तेरे चरणों में खो जाऊँ,

इतना व्याकुल मन लाई हूँ॥
तुम देखो पहिचान सको तो
तुम मेरे मन को पहिचानो।
जग न भले ही समझे,
मेरे प्रभु! मेरे मन की जानो॥

मेरा भी मन होता है,
मैं पूजूँ तुमको, फूल चढ़ाऊँ।
और चरण-रज लेने को
मैं चरणों के नीचे बिछ जाऊँ॥
मुझको भी अधिकार मिले वह,
जो सबको अधिकार मिला है।

8th STD Hindi Book.indb 17 18-03-2019 17:34:06

मुझको प्यार मिले, जो सबको देव!
तुम्हारा प्यार मिला है॥

तुम सबके भगवान,
कहो मंदिर में भेद-भाव कैसा?
हे मेरे पाषाण! पसीजो, बोलो क्यों होता ऐसा?
मैं गरीबिनी, किसी तरह से पूजा का सामान जुटाती।
बड़ी साध से तुझे पूजने,
मंदिर के द्वार तक आती॥

कह देता है किंतु पुजारी,
यह तेरा भगवान नहीं है।
दूर कहीं मंदिर अछूत का और दूर भगवान कहीं है॥

- सुभद्रा कुमारी चौहान

अभ्यास

I. कठिन शब्दार्थ

1. अधिकार – हक
2. असीम – बेहद
3. व्याकुल – दुखी
4. चढाना – अर्पण करना
5. पाषाण – पत्थर
6. पसीजना – पिघलना
7. जुटाना – जमा करना
8. अछूत – अस्पृश्य

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. कवयित्री खुद को क्या कहती है?
2. कवयित्री अंधकार में छिपते-छिपते मंदिर क्यों आयी?
3. कवयित्री की अभिलाषाएँ क्या क्या है?
4. कवयित्री भगवान से क्या चाहती हैं?
5. पाषाण मूर्ति भगवान को पिघलाने की बात कवयित्री क्यों कहती है?

8th STD Hindi Book.indb 18 18-03-2019 17:34:06

III. उचित शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए –

1. कवयित्री के मन में भगवान का प्यार_____ है ।
   1. असीम 2. सीमित 3. ज़रा भी नहीं

2. कवयित्री के मन में भगवान को _____ इच्छा है ।
   1. फूल चढ़ाने की 2. निंदा की 3. जल चढ़ाने की

3. कवयित्री _____ का अधिकार चाहती है ।
   1. मंदिर में प्रवेश करने 2. बोलने 3. पूजा करने

4. कवयित्री भगवान के दर्शन के लिए _____ आती है ।
   1. अंधेरे में 2. दिन में 3. सूरज की रोशनी में

5. हमारे दुखों को दूर करनेवाला _____ है ।
   1. दोस्त 2. भगवान 3. मालिक

IV. व्याख्या कीजिए –

1. बड़ा कमजोर हैं आदमी, अभी लाखों हैं इस में कमी

   पर तू जो खड़ा, हैं दयालू बड़ा,

   तेरी क्रिपा से धरती थमी

   दिया तूने हमें जब जनम,

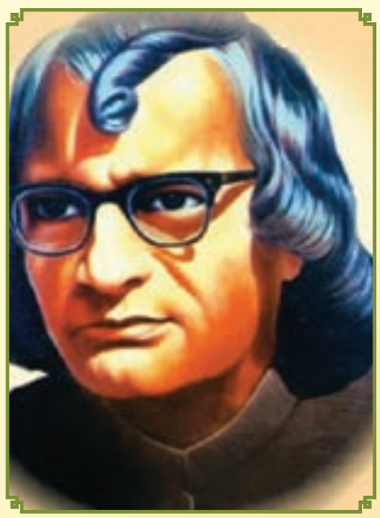
   तू ही झेलेगा हम सब के गम

   नेकी पर चले, और बदी से टले,

   ताकी हँसते हुये निकले दम।

8th STD Hindi Book.indb 19 18-03-2019 17:34:07

पद्य 8 बादल



सुरपति के हम हैं अनुचर,
जगत्प्राण के भी सहचर ;
मेघदूत की सजल कल्पना ,
चातक के चिरजीवन धर ,
मुग्ध शिखी के नृत्य मनोहर,
सुभग स्वाति के मुक्ताकर;
विहंग वर्ग के गर्भ विधायक,
कृषक बालिका के जलधर !

कभी चौकड़ी भरते मृग-से
भू पर चरण नहीं धरते ,
मत्त मतगंज कभी झूमते,
सजग शशक नभ को चरते;

कभी कीश-से अनिल डाल में
नीरवता से मुँह भरते ,
बृहत गृद्ध-से विहंग छदों को ,
बिखरते नभ,में तरते !

कभी अचानक भूतों का सा
प्रकटा विकट महा आकार
कड़क,कड़क जब हंसते हम सब ,
थर्रा उठता है संसार ;
फिर परियों के बच्चों से हम
सुभग सीप के पंख पसार,
समुद तैरते शुचि ज्योत्स्ना में,
पकड़ इंदु के कर सुकुमार !

8th STD Hindi Book.indb 20 18-03-2019 17:34:07

- सुमित्रा नंदन पंत

अभ्यास

I. कठिन शब्दार्थ

1. अनुचर - नौकर
2. सुरपति - इन्द्र
3. सहचर - साथी
4. शिखी - मोर
5. विहग - पक्षी
6. जलधर - बादल
7. मृग - हिरण
8. थर्राना - काँपना

II. उचित शब्द चुनकर खाली स्थान भरिए –

1. बादल _____ अनुचर हैं ।
   1. हवा का 2. सूर्य का 3. सुरपति का

2. कभी-कभी बादल _____ जैसे चौकडी भरते हैं ।
   1. बाघ 2. घोडा 3. हिरन

3. बादल _____ समान झूमते हैं ।
   1. हाथी 2. बालक 3. नर्तकी

III. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. बादल किसके अनुचर हैं?
2. बादल किसके सहचर हैं?
3. मोर कब नाचते हैं ?
4. स्वाति नक्षत्र की बूँद से सिपी में क्या बनता हैं ?
5. बादल कैसे संसार को थर – थराता हैं ?

8th STD Hindi Book.indb 21 18-03-2019 17:34:07

IV. बादल कविता का सारांश लिखिए ।

V. व्याख्या कीजिए –

कभी अचानक भूतों का सा

प्रकटा विकट महा आकार

कड़क,कड़क जब हंसते हम सब ,

थर्रा उठता है संसार ;

फिर परियों के बच्चों से हम

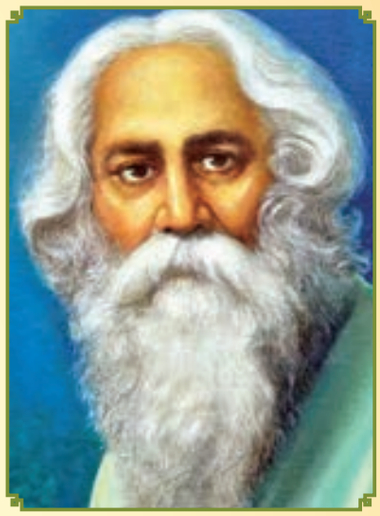
सुभग सीप के पंख पसार,

समुद तैरते शुचि ज्योत्स्ना में,

पकड़ इंदु के कर सुकुमार !

8th STD Hindi Book.indb 22 18-03-2019 17:34:07

पद्य 9 छोटी-सी हमारी नदी



छोटी-सी हमारी नदी टेढ़ी-मेढ़ी धार,

गर्मियों में घुटने भर भिगो कर जाते पार।

पार जाते ढ़ोर-डंगर बैलगाड़ी चालू,

ऊँचे है किनारे इसके, पाट इसका ढालू ।

पेटे में झकाझक बालू कीचड़ का न नाम,

काँस फूले एक पार उजले जैसे घाम ।

दिन भर किचपिच-किचपिच करती मैंना डार-डार,

रातों को हुआँ-हुआँ कर उठते सियार ।

अमराई दूजे किनारे और ताड़-वन,

छाँहों-छाँहों बाम्हन टोला बसा है सघन ।

बच्चे-बच्चे धार-कछारों पर उछल नहा लें,

गमछों-गमछों पानी भर-भर अंग-अंग पर ढालें ।

कभी-कभी वे साँझ-सवेरे निबटा कर नहाना

छोटी-छोटी मछली मारें आँचल का कर छाना ।

बहुएँ लोटे-थाल माँजती रगड़-रगड़ कर रेती,

कपड़े धोतीं, घर के कामों के लिए चल देतीं ।

8th STD Hindi Book.indb 23 18-03-2019 17:34:07

जैसे ही आषाढ़ बरसता, भर नदिया उतराती,

मतवाली-सी छूटी चलती तेज़ धार दन्नाती ।

वेग और कलकल के मारे उठता हैं कोलाहाल,

गँदले जल में घिरनी-भँवरी भँवराती है चंचल ।

दोनों पारों के वन-वन में मच जाता हैं रोला

वर्षा के उत्सव में सारा जग उठता हैं टोला ।

- रवींद्रनाथ ठाकुर

अभ्यास

I. कठिन शब्दार्थ

1. ढोर - डंगर
2. बालू - रेत
3. धार - बहाव
4. छाँहों - छाया
5. दन्नती - बहाती
6. साँझ - शाम
7. डार-डार – डाल-डाल

II. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. नदी की धारा कैसी चलती हैं?
2. नदी के किनारे पर बहुएँ क्या-क्या करती हैं?
3. किस महीने में पानी बरसता है?
4. वर्षा के बाद नदी की धारा का कवि कैसे वर्णन करता है?
5. गर्मी में कीचड का नाम क्यों नहीं है?

8th STD Hindi Book.indb 24 18-03-2019 17:34:07

III. उचित शब्द चुनकर खाली जगह भरिए –

1. गर्मियों में पानी _____ बहता है ।

   1. सिर तक 2. गर्दन तक 3. घुटनों तक

2. गर्मियों में नदी पर _____ जाती है ।

   1. बैल गाडी 2. नाव 3. जहाज

3. बर्षा के मौसम में नदी _____ छूटी चलती है ।

   1. मतवाली सी 2. पटाखों सी 3. फव्वारे सी

4. बहुएँ _____ माँजती है ।

   1. लोट - थाल 2. कपडे 3. धोती

5. वेग और कल-कल के कारण _____ उठता है ।

   1. कोलाहाल 2. धूल 3. मन

IV. व्याख्या कीजिए -

छोटी-सी हमारी नदी टेढ़ी-मेढ़ी धार,

गर्मियों में घुटने भर भिगो कर जाते पार।

पार जाते ढ़ोर-डंगर बैलगाड़ी चालू,

ऊँचे है किनारे इसके, पाट इसका ढालू ।

8th STD Hindi Book.indb 25 18-03-2019 17:34:07

गद्य 10 हमारी संसद



"फोन कहाँ से आया हैं " पिताजी ? रजनी ने पिता से पूछा ।

"तुम्हारे मामा का है, बेटी। वे आज शाम की गाड़ी से दिल्ली से आ रहे हैं।"

पिताजी, मामाजी बार-बार दिल्ली क्यों जाते हैं ?

"तुम यह भी नहीं जानती !" रघु बीच में बोल उठा । "वे एम.पी हैं, यानी सांसद हैं और संसद की बैठकें दिल्ली में हुआ करती हैं ।"

"मैं तुम से नहीं पूछती। तुम चुप रहो जी । बडे जाननेवाले आये हैं!" क्रोध से रजनी का मुँह लाल हो गया ।

थोडी देर के बाद फिर उसने कहा – 'पिताजी, यह संसद क्या है?' "बेटी, देश का शासन चलाने के लिए कानून बनाना बहुत जरूरी हैं । हमारे प्रतिनिधि ही यह कानून बनाते हैं। उन प्रतिनिधियों का मंडल ही संसद कहलाता हैं।" पिता ने समझाया।

8th STD Hindi Book.indb 26 18-03-2019 17:34:07

लेकिन पिताजी, हमारा देश कभी का स्वतंत्र हो गया है और देश की जनता ही देश का शासक हैं । तब जनता को ही कानून बनाकर देश के शासन के कार्य में भाग लेना चाहिए न ? – रघु ने पूछा ।

"तुम ठीक कह रहे हो बेटा! मगर यह कैसा संभव है कि करोडों लोग एक जगह इकट्ठे होकर कानून बनावे, या शासन के कार्य में भाग लें । इसलिए जनता इस कार्य के लिए अपने प्रतिनिधि चुन लेती हैं।" – पिता ने समझाया ।

"पिताजी, कहते हैं कि संसद के दो सदन होते हैं – लोक सभा और राज्य सभा। लोक सभा के सदस्य जनता के द्वारा चुने जाते हैं। राज्य सभा में प्रायः बुजुर्ग और अनुभवी लोग चुने जाते हैं। राज्य सभा में प्रायः बुजर्ग और अनुभवी लोग रहते हैं। कानून बनाना बड़ी जिम्मेदारी का काम हैं। अगर एक ही सदन रहा तो संभव हैं कि कभी वह सभी बातों पर विचार किये बिना जल्द-बाजी में कोई कानून बना डाले । इसे रोकने का काम दूसरा सदन करती हैं।"

"तो पिताजी, मंत्रियों का चुनाव कौन करते हैं? " रजनी ने पूछा।

"संसद में कई पार्टियों के सदस्य होते हैं । वहाँ किस पार्टी का बहुमत होता हैं, उसके नेता को राष्ट्रपति मंत्री मंडल बनाने का निमंत्रण देते हैं। वही नेता प्रधान मंत्री बनता है और अपने सहयोगी मंत्रियों का चुनाव करता हैं। किन्तु राष्ट्रपति ही उनकी नियुक्ति करते हैं ।"

"राष्ट्रपति को कौन चुनते हैं?" रजनी ने पूछा । संसद के सदस्य और राज्यों की विधान सभाओं के सदस्य राष्ट्रपति को चुनते हैं। रघु के मन में अभी शंका बनी रही। उसने कहा – "पिताजी, आप कहते हैं कि देश का सच्चा शासक जनता ही है। मगर मान लीजिए कि एक बार चुने जाने के बाद से प्रतिनिधि जनता की इच्छा की परवाह किये बिना कानून बना दे तो जनता क्या करेगी ?"

पिता ने समझाया – "प्रतिनिधि सदा के लिए थोडे ही चुने जाते हैं? उनका चुनाव होता हैं । यदि कोई प्रतिनिधि प्रजा का विश्वास खो जाय या जनता की इच्छा के विरूदध कार्य करे तो अगले चुनाव में जनता उसे नहीं चुनेगी ।" "तब तो शासन का यह बडा अच्छा तरीका है" रघु ने कहा ।

8th STD Hindi Book.indb 27 18-03-2019 17:34:07

अभ्यास

I. (A) कठिन शब्दार्थ

1. मुँह लाल हो जाना - क्रोध होना, नाराज़ होना
2. भाग लेना - हिस्सा लेना
3. जिम्मेदारी - दायित्व
4. निमंत्रण देना - बुलाना
5. नियुक्ति करना - नियमन करना
6. शंका - संदेह
7. मान लेना - स्वीकार करना
8. तरीका - ढंग
9. इकट्ठा होना - एकत्रित होना

(B). निम्नलिख शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

1. मुँह लाल हो जाना
2. भाग लेना
3. जिम्मेदारी
4. निमंत्रण देना
5. नियुक्ति करना
6. शंका
7. मान लेना
8. तरीका
9. इकट्ठा होना

II. विलोम शब्द लिखिए –

1. बहुमत x अल्पमत
2. एक x अनेक
3. विश्वास x अविश्वास
4. संभव x असंभव

8th STD Hindi Book.indb 28 18-03-2019 17:34:07

III. सही या गलत लिखिए –

1. संसद की बैठकें हर प्रांत में होती हैं ।
2. बहुमत के नेता को राष्ट्रपति मंत्री मंडल बनाने का निमंत्रण देते हैं ।
3. राष्ट्रपति को सदन के तथा विधान सभा के सदस्य चुनते हैं।
4. देश का सच्चा शासक सांसद हैं ।
5. अविश्वासी प्रतिनिधियों को जनता अगले चुनाव में चुनेगी ।

IV. खाली जगह भरिए –

1. वे एमपी. है यानि _____ ।
2. _____ ही देश का शासक हैं ।
3. संसद के दो सदन _____ व _____ हैं।
4. लोक सभा के सदस्य _____ द्वारा चुने जाते हैं ।
5. कानून बनाना बडा _____ काम हैं ।

V. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए –

1. रजनी के मामा क्यों दिल्ली जाया करते हैं ?
2. आजादी के बाद भारत के शासक कौन होते हैं?
3, जनता किस कार्य के लिए अपने प्रतिनिधि चुनती हैं?
4. मंत्रियों का चुनाव कौन करते हैं ?
5. देश के प्रधान मंत्री कौन बनते हैं ?
6. राष्ट्रपति को कौन चुनते हैं ?
7. चुनाव में जनता किस का चुनाव नहीं करते है?

VI. विस्तृत उत्तर लिखिए –

1. संसद क्या हैं? उसके कामों का विवरण दीजिए?
2. संसद के दो सदन क्या-क्या होते हैं? वे कैसे बनते हैं?

8th STD Hindi Book.indb 29 18-03-2019 17:34:07

गद्य 11 न्याय का घंटा



(पहला दृश्य)

(चोळ राज्य की राजधानी तिरुवारूर का राजमहल अंतपुर में चोळराजा, महारानी के साथ बातें कर रहे हैं । समय प्रातःकाल)

राजा	:-	देवी, आज हमारे कुल का दीपक वीतिविटंकन का जन्मदिन है न? कहाँ है वह? उसे बुलाओ तो मैं आशीर्वाद दूँ ।
रानी	:-	विराजिए नाथ । सबेरे ही भगवान शिव का पूजा-अर्चना करने वह मंदिर गया हुआ है। आता ही होगा मंदिर से लौटते ही, आपके चरणों में सिर झुकाने वह आएगा ।
राजा	:-	हाँ – देवी, जानता हूँ, उसकी पितृभक्ति को ।
(बाहर से घंटे की ऊँची आवाज़ सुनाई देने लगती हैं)		
राजा	:-	(चौंककर) ऐं कौन है, जो सबेरे सबेरे न्याय की दुहाई देते हुए आ गया हैं। (हाथ - पीटकर) कोई है?

8th STD Hindi Book.indb 30 18-03-2019 17:34:07



(एक सिपाही प्रवेश करके प्रणाम करता है)		
राजा	:-	देखो तो, कोई दुखी आदमी न्याय माँगते हुए घंटा बजा रहा है। उसे तुरंत दरबार में हाजिर करो। हम अभी आते हैं।
सिपाही	:-	धर्मावतार ! न्याय माँगनेवाला कोई आदमी नहीं हैं। एक गाय करूण-क्रंदन करती हुई घंटा बजा रही हैं।
राजा	:-	गाय घंटा बजा रही हैं? क्या आश्चर्य हैं! पता नहीं उस मूक प्राणी को किसने दुख पहुँचाया हैं। महामंत्री को तुरंत बुला ले आओ
(सिपाही चला जाता हैं)		
महामंत्री	:-	(प्रवेश करके) महाराज की जय हो। (प्रणाम करता हैं)
राजा	:-	महामंत्री!, सुना आपने? एक गाय न्याय माँगती हुई घंटा बजा रही हैं। आप पता लगाइए कि उस मूक पशु को किसने दुःख पहुँचाया हैं ? अपराधी को दरबार में हाजिर कराइए।

8th STD Hindi Book.indb 31 18-03-2019 17:34:07



मंत्री	:-	जो आज्ञा ! (प्रणाम करके चला जाता हैं)
	दूसरा दृश्य	
	(चोळ राजा की राजसभा । महाराज सिंहासन पर बैठे हैं । महामंत्री तथा अन्य मंत्री राजा के दोनों ओर बैठे हैं । राजकुमार वीतिविटंकन मंत्रियों से दूर अलग बैठा हैं)	
राजा	:-	महामंत्री, क्या आपने पता लगाया हैं कि किस दुष्ट ने गाय को दुःख पहुँचाया हैं ।
मंत्री	:-	हाँ! महाराज! बात मामूली सी है । आज राजकुमार वीतिविटंकन शिवजी के मंदिर से रथ पर सवार होकर आ रहे थे । अचानक एक गाय का बछ़डा उनके रथ के सामने आ गया और कुचल गया । इसमें राजकुमार का कोई दोष नहीं है। यदि महाराज चाहें तो गाय के मालिक को इतना सोना दिया जाएगा कि वह दस दुधारूँ गायें खरीद सके ।

8th STD Hindi Book.indb 32 18-03-2019 17:34:08

राजा	:-	आपका कहना तो ठीक हैं। इससे गाय का मालिक शायद खुश हो जाय। किंतु एक अबोधबछडे की मृत्यु और उससे उसकी माँ को जो दुःख हुआ, उसका न्याय कहाँ हुआ?
मंत्री	:-	अन्नदाता ! राजकुमार ने जानबूझकर बछडे के प्राण नहीं लिये हैं। यह गलती अनजान में हो गयी। और सो भी एक पशु .....
राजा	:-	महामंत्री, आप कैसी बातें कर रहे हैं? न्याय राजा और रंक मनुष्य और पशु में कोई भेद नहीं करता। यह बात सही है कि राजकुमार ने अनजान में बछ़डे के प्राण लिये हैं। मगर अपराध, अपराध ही है, चाहे वह अनजान में हो गया हो, चाहें जान बूझकर किया गया हो। हम अपना फ़ैसला सुनाने के पहले अपराधी की कैफियत भी सुनना चाहते हैं। कहो, वीतिविटंकन, तुम्हें कुछ कहना हैं ?
राजकुमार	:-	धर्मावतार, मुझे कुछ कहना नहीं है। अनजान में ही सही, मुझसे भयंकर पाप हो गया हैं। मृत्युदंड से भी मेरा यह पाप धुल नहीं सकता।
राजा	:-	(गंभीर होकर) अपराधी, हमें तुम पर सहानुभूती आवश्य हैं। किंतु न्याय के आगे हम लाचार हैं। तुमने एक बछडे को कुचलकर, उसकी माँ को अपार दुख पहुँचाया हैं। इसलिए हम आज्ञा देते हैं कि तुम्हें भी रथ के नीचे उसी स्थान पर कुचला दिया जाय जहाँ तुमने बछडे को कुचल दिया था, जिससे तुम्हारे माता-पिता को वही दुख मिले, जो गाय को मिला था। महामंत्री स्वयं इस आज्ञा का पालन करेंगे।
मंत्री	:-	(अवाक् से खडे हो कर) मैं . ... मैं ..... मैं इस आज्ञा का पालन करूँ। हे शंभो, यह कैसी परीक्षा हैं ! ... अन्नदाता, मुझे बचाइए। मैं यह काम कैसे करूँ महाराज .....
राजा	:-	हाँ, हाँ महामंत्री आप स्वयं इस आज्ञा का पालन करेंगे। आप संकोच क्यों करते हैं ? यह राजा की आज्ञा हैं। समझे ?
मंत्री	:-	हाँ, महाराज, समझता हूँ। राजा की आज्ञा कहीं टल सकती हैं? धीमी आवाज से। पर मैं मैं कैसे ... (राजा को प्रणाम करके, कुछ गुनगुनाता हुआ चला जाता हैं। राजा चिंतित बैठे हैं। इतने में सभा-मंडप के बाहर कुछ शोर-गुल सुनाई पड़ता है। 'गजब हो गया' दौडो, दौडो "महामंत्री ने आत्महत्या कर ली है" की आवाजे सुनायी पडती हैं)

8th STD Hindi Book.indb 33 18-03-2019 17:34:08

राजा	:-	(चौंककर) क्या बात हैं ? यह शोरगुल कैसे ? एक सिपाही घबराया हुआ प्रवेश करता हैं)
सिपाही	:-	महाराज गजब हो गया है। सभा से बाहर निकलते ही महामंत्री ने आत्म हत्या कर ली है।
राजा	:-	महामंत्री ने आत्महत्या कर ली। उफ़! कैसा अनर्थ हैं। हमारी आज्ञा का पालन करने से बचने के लिए महामंत्री ने आत्महत्या कर ली हैं। हे परमशिव! तुम्हारी क्या इच्छा है ? (थोड़ी देर आँखे बंद किये बैठते हैं। फिर दृढता से। कोई बात नहीं। भगवान शंकर ही हमारी सहायता करेंगे। हम खुद अपराधी को दंड देंगे। सिपाही, तुरंत हमारा रथ ले आओ। हम स्वयं अपराधी को रथ के नीचे कुचल देंगे। देखते क्या हो ? जाओ, जल्दी रथ ले आओ। (सिपाही चला जाता है)

अभ्यास

I. (अ) कठिन शब्दार्थ

1. विराजिए - बैठिए
2. हाजिर करो - उपस्थित करो
3. मूक - गूँगा
4. आज्ञा - हुकुम
5. मामूली - साधारण
6. कुचल जाना - दबाया जाना
7. प्राण लेना - जान लेना
8. फ़ैसला - इन्साफ़
9. पाप घुल जाना - पाप से मुक्त होना
10. अपार - असीम
11. अवाक् - चकित
12. गजब - विचित्र
13. हत्या करना - खून करना

8th STD Hindi Book.indb 34 18-03-2019 17:34:08

(B). निम्नलिख शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

1. विराजिए
2. हाजिर करो
3. मूक
4. आज्ञा
5. मामूली
6. कुचल जाना
7. प्राण लेना
8. फ़ैसला

II. विलोम शब्द लिखिए –

1. प्रातः काल x सायंकाल
2. हाज़िर x गैर-हाज़िर
3. मूक x बाचाल
4. चल x अचल
5. जान x अनजान
6. अपराधी x निरापराधी
7. पाप x पुण्य
8. धीमी x तेज़

III. खाली जगह भरिए –

1. एक गाय _____ क्रंदन करती हुई घंटी बजा रही हैं।
2. उसे बुलाओ तो मैं _____ दूँ ।
3. न्याय राजा और रंक _____ और पशु में कोई भेद नहीं करता ।
4. भगवान शंकर ही हमारी _____ करेंगे ।
5. यह राजा की _____ है ।

IV. सही या गलत लिखिए –

1. वीतिविटंकन में पितृभक्ति नहीं थी ।
2. न्याय की घंटी बैल ने बजाई ।
3. अचानक एक गाय का बछडा उनके रथ के सामने आ गया ।
4. अनजान का अपराध क्षम्य हैं ।
5. मंत्री ने राजकुमार को दंड देना नहीं चाहा ।

8th STD Hindi Book.indb 35 18-03-2019 17:34:08

V. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए –

1. राजा के बेटे का नाम क्या है?

2. राजकुमार कहाँ गया था?

3. न्याय की घंटी किसने बजाई?

4. गाय के बछडे पर किसने रथ चलाया ?

5. राजकुमार को राजा ने कौन-सी सजा दी ?

6. इस एकांकी की सीख क्या है ?

VI. प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए –

1. गाय के न्याय की घंटी बजाने का कारण क्या था ?

2. मंत्री ने राजा को कैसे शांत करना चाहा ?

3. राजा ने अपने फैसले का कारण क्या बताया ?

4. राजा के दंड निर्णय पर अपना विचार लिखिए।

8th STD Hindi Book.indb 36 18-03-2019 17:34:08

गद्य 12 दक्षिण की पुरानी नाट्य कलाएँ



भारत में प्राचीन काल से ही शास्त्रीय और क्षेत्रीय नृत्यों का बहुमुखी विकास होता आया है, ये दर्शन, धर्म, जीवन चक्र, मौसम और पर्यावरण की भारतीय दृष्टि को दर्शाते हैं। भरत मुनि का नाट्य शास्त्र नृत्यकला का प्रथम प्रमाणिक ग्रंथ माना जाता हैं। इसे पंचवेद भी कहा जाता हैं। भरत नाट्यम सबसे पुराऩी शास्त्रीय नृत्य शैली हैं।

भरतनाट्यम

सभी नृत्यों में सबसे प्राचीन नृत्य भरतनाट्यम् हैं। भरतनाट्यम् द्वारा एक नर्तकी 10 या 12 भावों को प्रदर्शित करती हैं। भरतनाट्यम् दक्षिण भारत में विकसित हुआ, जहाँ पल्लव और चोल राजाओं ने अपनी मूर्तिकला, चित्रकला और भक्ति विकास के लिए देवताओं द्वारा भव्य हिंदु मंदिरों का निर्माण कराया था। मंदिरों में सैकड़ों देवदासियों (देवताओं की सेविकाएँ) को रखा ।

बीसवीं सदी के शुरूआती दशकों में रुक्मिणी देवी अरुण्डेल ने भरतनाट्यम् का पुनरुद्धार करने का प्रयास किया। मद्रास में ई.कृष्णा अय्यर ने सन् 1928 में संगीत

8th STD Hindi Book.indb 37 18-03-2019 17:34:08

अकादमी की स्थापना की और रुक्मिणी देवी ने सन् 1936 में भरतनाट्यम् के एक प्रशिक्षण संस्थान कलाक्षेत्र अकादमी की स्थापना की ।

भरतनाट्यम के सिद्धांतों में हाथ, पैर, मुख व शरीर संचालन संबंधी 64 सिद्धांत हैं, जिनका अध्ययन नृत्य पाठ्यक्रम के साथ-साथ किया जाता है। पहले इसे सदिर, दासी आट्टम और तन्जावूरनाट्यम के नामों से जाना जाता था।

भरतनाट्यम को वर्तमान रूप प्रदान करने का श्रेय तंजाऊर चतुष्ट्य, अर्थात पोन्नया पिल्लै तथा उनके बंधुओं को जाता हैं। 20 वीं शताब्दी में रवीन्द्रनाथ टैगोर, उदयशंकर और मेनका जैसे कलाकारों के संरक्षण में यह नाट्यकला पुणर्जीवित हुई। रुक्मिणी देवी अरुण्डेल भारत की सबसे पहली प्रख्यात नृत्यांगना थीं। अन्य प्रमुख कलाकारों में यामिनी कृष्णमूर्ति, सोनल मानसिंह, पद्मा सुब्रह्मण्यम्, मालविका सरकार के नाम उल्लेखनीय हैं ।

कथकली

कथकलीं केरल राज्य का एक नृत्य-नाटक का रूप हैं। कथकली के विकास की एक लंबी प्रक्रिया की परिणति है कुडियाट्टम और कलारिपयाट्टू से बना हैं । कथकली में नर्तक और इसका नाट्य गीत मनिप्रवालम् में गाया जाता हैं । संस्कृत गर्भित मलयालम भाषा को मनिप्रवालम कहते हैं । कथकली हाथ के इशारों और विभिन्न मुद्राओं से प्रदर्शित किया जाता हैं । कथकली का प्रशिक्षण बहुत कठिन होता हैं। कथकली की वेशभूषा और शृंगार कथकली प्रदर्शन की प्रतीकात्मक बारीकियों को दर्शता है। कथकली की मुख्य विशेषता चेहरे की मांसपेशियों की विभिन्न गतिविधियाँ हैं। इस नृत्य में चेहरा विभिन्न भावों का झीड़ा स्थल बन जाता हैं । कथकली में दो मुख्य संगीतकार होते हैं, एक है 'पोनानी' और दूसरे हैं 'सिनकिडी' । दो और संगीतकार हैं जो चेन्दा और मदालम (एक प्रकार के ढोल) बजाते हैं। कल्याण सौगंधिकम, वाली विजयम, रावणासुरवधम, नल चरितम और सीता स्वयंवरम इसके प्रसिद्ध नृत्य नाटकों में शामिल है।

कुडियाट्टम्

केरल की परंपरा के अनुसार राजा कुलशेकर वर्मन (सन् 900 ई) ने अपने

8th STD Hindi Book.indb 38 18-03-2019 17:34:08

ब्राह्मण मंत्री तोलन के साथ इत नृत्य को प्रचलित किया । उन्होंने ही मंच पर मलयालम भाषा के प्रयोग की शुरु आत की जहाँ केवल संस्कृत का प्रयोग किया जाता था। कुडियाट्टम् सौंदर्य आनंद की असीम संभावनाएं प्रदान करता हैं । इसमें एक नृत्य-नाटक आठ या नौ दिनों तक चलता हैं, जिसका अभ्यास महीनों तक किया जाता हैं। नाट्कों में शानदार मलयालम भाषा में हास्य और व्यंग्य प्रयोग प्रस्तुत किया जाता हैं। साधारणतः 'कूत्तंपलम' नामक मंदिर से जुडे नाट्यगृहों में इस कला का मंचन होता हैं।

कुडियाट्टम् में अभिनय की चार रीतियों का प्रयोग किया जाता है – 'आंगिक', 'वाचिक', 'सात्विक' और 'अहार्य ' इलकियाट्टम, पकर्न्नाट्टम, इरुन्नाट्टम आदि विशेष अभिनय रीतियाँ मनोरंजन के साथ-साथ उपदेशात्मक भी होती हैं। अम्मनौर माधव चकियार, जी वेणु और उनकी बेटी कपिला इस कला की युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में उभर आये हैं।

कुचिपुड़ी

प्राचीन मान्यताओं के अनुसार आंध्र प्रदेश के कुचिपुड़ी गाँव में योगी सिद्धेन्द्र इस नृत्य के जनक माने जाते हैं। वे भगवान श्रीकृष्ण के भक्त थे । सोलहवीं शताब्दी के कई शिलालेखीय और साहित्यिक स्रोतों में से नृत्य का उल्लेख मिलता है। यह नृत्य संभवतः यक्षगान से विकसित हुआ है। सन् 1668 में गोलकुंडा के नवाब अब्दुल हसन इस नृत्य से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने इस प्रदर्शन में भाग लेनेवाले ब्राह्मणों को कुचिपुड़ी गाँव इनाम में दिया ।

सबसे लोकप्रिय कुचिपुड़ी नाटक में भगवान श्रीकृष्ण की सबसे ईर्ष्यालु पत्नी सत्यभामा की कहानी है। यह 'सत्यभामा' आधुनिक भारत का सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध नाटक है, जिसे भामाकल्पम कहते हैं । लोकप्रिय कुचिपुड़ी नाटकों में उषा परिणयम, प्रहलाद चरित्रम और गोला कलपम है । इसमें प्रत्येक अभिनेता के प्रवेश के समय एक गीत गाया जाता है, जिसके द्वारा वह अपना परिचय खुद कराता देता है। लक्ष्मीनारायण शास्त्री और उनके शिष्य वेम्पति चिन् सत्यम ने भी इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है ।

8th STD Hindi Book.indb 39 18-03-2019 17:34:08

मोहिनिआट्टम

मोहिनीआट्टम् का अर्थ है "जादूगरनी का नृत्य", जो केवल महिला नर्तकियों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। तमिलनाडु की देवदासियाँ मंदिरों में इस नृत्य का प्रदर्शन करती थी। इस नृत्य का उल्लेख सन् 934 ई. के नेदमपुरा वाली शिलालेखों में मिलता है। शिवानन्दम् और वडिवेलु को शाही संरक्षण प्राप्त हुआ तो उन्होंने मोहिनीआट्टम् के एकल नृत्य रूप के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मोहिनीआट्टम् नृत्य का प्रारंभ चोल्केतु के गायन के साथ होता है। पारंपरिक रूप में मोहिनीआट्टम् नृत्य में भगवान विष्णु के सागर-मंथन की कथा का मंचन होता है।

लोक नृत्य

केरल राज्य लोक नृत्यों की विविधता के विषय में बहुत ही प्रसिद्ध है। ये नृत्य स्थानीय लोगों के मनोभावों को संगीत और वेशभूषा द्वारा दर्शाते हैं। ये सभी लोक नृत्य फसल के संबंधी महत्व को दर्शाते हैं। ये प्रदर्शन बीज़ों की बुवाई और त्योहारों को जीवंत बना देते है। अधिकांश लोक नृत्य गानों के साथ मंचित किये जाते हैं जिन्हे नर्तकियों खुद ही गाती हैं।

केरल में पचास से ज्यादा लोक नृत्य हैं जिनमें कनियाट्टम, मुडियाट्टम, कोलम तुंलाल, कोलकली, पूराकली, वेलाकली, करूवाकली और थिरुवाथिराकली काफ़ी लोकप्रिय हैं।

संघाकली

मूलतः संघाकली एक सामाजिक – धार्मिक नृत्य है। संघाकली का मूल प्राचीन केरल के जिमनेशिया (कलारी) के रूप में पाया गया हैं जहाँ पर शारीरिक व्यायाम और सैन्य प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाता हैं। नृत्य का अंतिम चरण कुदेमुडुप्पू के नाम से जाना जाता है।

इस प्रकार दक्षिण भारत नृत्य, नाट्य-नृत्य और नृत्य-नाट्य की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है। दक्षिण की ये कलाएँ भारतीय संस्कृति की आधारशिला हैं। भारतीय संस्कृति, दर्शन और पौराणिक कथाओं को जीवन देनेवाले ये नृत्य पूरे विश्व को अपनी ओर आकर्षित करते चले आ रहे हैं।

8th STD Hindi Book.indb 40 18-03-2019 17:34:08

अभ्यास

I. कठिन शब्दार्थ

1. विकास - तरक्की
2. मौसम - ऋतु
3. नर्तकी - नाचनेवाली, नृत्यांगना
4. अध्ययन - पढ़ाई
5. आयोजन - प्रबंध
6. हासिल - उपलब्ध, प्राप्त

II. हिन्दी में शब्दार्थ लिखिए

1. प्राचीन
2. बहुमुखी
3. परंपरा
4. नृत्य
5. प्रमाणिक
6. ग्रंथ
7. निर्माण
8. निरंतर
9. पर्यावरण
10. विशिष्ट

III. वाक्यों में प्रयोग कीजिए –

1. प्रदर्शित करना
2. निर्माण करना
3. विभिन्न
4. प्रयास करना
5. प्रशिक्षण

IV. गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

मोहिनीआट्टम का अर्थ हैं 'जादूगरनी का नृत्य', जो केवल महिला नर्तकियाँ द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। तमिलनाडु की देवदासियाँ मंदिरों में इस नृत्य का प्रदर्शन करती

8th STD Hindi Book.indb 41 18-03-2019 17:34:08

थी । इस नृत्य का उल्लेख सन् 934 ई. के नेदमपुरा तल शिलालेखों में मिलता हैं ।

1. मोहीनीआट्टम का अर्थ क्या है ?

2. तमिलनाडु को देवदासियाँ मन्दिरों में क्या कराती थी?

3. मोहिनीआट्टम नृत्य का उल्लेख कहाँ मिलता है?

V. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में दीजिए –

1. नृत्यकला का प्रथम प्रामाणिक ग्रन्थ का नाम क्या है?

2. भरतनाट्यम में कितने भावों की प्रदर्शनी होती है ?

3. कुचिपुडी किस प्रांत की कला है?

VI. 'दक्षिण की पुरानी नाट्य कलाएँ ' कौन-सी हैं? संक्षिप्त परिचय दीजिए ।

1. दक्षिण की पुराणी नाट्य कलाओं से आपने क्या सीखी? सविस्तार लिखिए।

8th STD Hindi Book.indb 42 18-03-2019 17:34:08

गद्य 13 शास्त्रीजी की महानता



लाल बहादुर शास्त्री का जन्म 2 अक्तूबर 1904 ई. को मुगलसराय (वारणासी) के एक साधारण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम शारदा प्रसाद तथा माता का नाम रामदुलारी देवी था । अनेक सद्‌गुणों के कारण समाज में उनकी अच्छी प्रतिष्ठा थी ।

लाल बहादूर हरिश्चन्द्र हाई स्कूल, बनारस में पढ रहे थे । तब लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की यह वाणी " स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है" पूरे देश में गूँज रही थी। इस से प्रभवित होकर शास्त्रीजी स्वराज्य आंदोलन में भाग लेने लगे। उनहें कई बार जेल की यातानाएँ सहनी पडी ।

देश स्वतंत्र हुआ स्वतंत्र भारत में अपनी सरकार बनी । प्रधानमंत्री पंडित जवहरलाल नेहरू ने उन्हें केंद्रीय मंत्रिमंडल मे रेलमंत्री बनाया । इस क्षेत्र में उन्होंने अनेक सुधार किये । उनके समय में एक बार भीषण रेल दुर्घटना हुई । उस दुर्घटना से दुखी होकर शास्त्रीजी ने मंत्रि पद को त्याग दिया । बाद में उद्योग मंत्री का दायित्व दिया गया । सभी पदों पर उन्होंने बडी निष्ठा, तत्परता और ईमान्दारी से कार्य किया। पं.जवाहरलाल नेहरू के निधन के बाद शास्त्री जी सर्व सम्मति से भारत के प्रधान मंत्री बने ।

शास्त्रीजी के सीधे-सादे व्यक्तित्व में अद्‌भुत दृढता भरी हुई थी ।

भारत के द्वितीय प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री सादगी और महानता की प्रतिमूर्ति थे। उनके जीवन के अनेक प्रसंग प्रेरणादायक हैं।

एक बार प्रधान मंत्री के हैसियत से शास्त्री एक कपडे की मिल देखने के लिए गए । उनके साथ मिल का मालिक उच्च अधिकारी और अन्य लोग भी थे ।

8th STD Hindi Book.indb 43 18-03-2019 17:34:09

मिल देखने के बाद जब शास्त्रीजी मिल के गोदाम में पहुँचे तो उन्होंने साडियाँ दिखाने को कहा। मालिक ने खूबसूरत साडियाँ दिखायीं । साडियाँ देखकर कहा – साडियाँ तो कीमती हैं । मुझे कम मूल्य की साडियाँ दिखाइए । फिर मालिक ने और साडियाँ दिखाई । वे भी 500/- रुपये की थी ।

तब शास्त्री ने कहा – अरे भाई ये भी कीमती है। मुझ जैसे गरीब के लिए कम मूल्य की साडियाँ दिखलाएँ जिन्हें मैं खरीद सकूँ । शास्त्रीजी बोले । 'वाह सरकार,' आप तो हमारे प्रधान मंत्री हैं, गरीब कैसे ? हम तो आपको ये साड़ियाँ भेंट कर रहे हैं। मिल मालिक कहने लगा । नहीं भाई ! मैं भेंट नहीं लूँगा । शास्त्रीजी स्पष्ट बोले। क्यों साहब? हमें यह अधिकार है कि हम अपने प्रधान मंत्री को भेंट दें । मिल मालिक अधिकार जताता हुआ कहने लगा।

"हाँ, मैं प्रधान मंत्री हूँ ।" शास्त्रीजी ने बडी शांति से जवाब दिया । पर इसका अर्थ तो नहीं हैं कि जो चीज़ मैं खरीद नहीं सकता, वह भेंट में लेकर अपनी पत्नी को पहनाऊँ । "भाई ! मैं प्रधान मंत्री हूँ । पर हूं तो गरीब ही । शास्त्रीजी ने साफ इनकार कर दिया । मिल मालिक की अनुनय विनय बेकार गई । देश के प्रधान मंत्री ने कम मूल्य की साडियाँ पैसे देकर खरीदी । ऐस महान थे लालबहादुर शास्त्री जी ।

अभ्यास

I. (अ) कठिन शब्दार्थ

1. हैसियत - पद
2. भेंट - इनाम
3. जताना - जानकारी देना, बतलाना
4. इनकार करना - अस्वीकार करना

(आ). निम्नलिखित कठिन शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

1. हैसियत 2. भेंट 3. जताना 4. इनकार करना

8th STD Hindi Book.indb 44 18-03-2019 17:34:09

II. सही या गलत लिखिए –

1. शास्त्रीजी सादगी और महानता की प्रतिमूर्ति थे।

2. शास्त्रीजी ने 500/- रुपयेकी साडी ले ली ।

3. दूकानदार ने साडी भेंट की ।

4. शास्त्रीजी ने कहा कि मैं गरीब हूँ ।

III. खाली जगह भरिए –

1. मालिक ने _____ साडियाँ दिखाई ।

2. _____ आपतो हमारे प्रधान मंत्री हैं ।

3. हाँ, मैं _____ हूँ ।

4. शास्त्री जी ने _____ इनकार कर दिया ।

IV. एक या दो वाक्यों में प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. शास्त्रीजी का पूरा नाम क्या है ?

2. मिल के मालिक ने कैसी साडियाँ दिखाई ?

3. साडियाँ लेने से इनकार करते हुए शास्त्री ने क्या बताया ?

V. शास्त्री जी की महानता के बारे में दस वाक्य लिखिए ।

8th STD Hindi Book.indb 45 18-03-2019 17:34:09

गद्य 14 अक्षरों का महत्व





-गुणाकर मुले

अक्षरों की कहानी .....

यह पुस्तक अक्षरों से बनी हैं। सारी पुस्तकें अक्षरों से बनी हैं। तरह-तरह की पुस्तकें। तरह-तरह के अक्षर।

दुनियाँ में अब तक करोडों पुस्तकें छप चुकी हैं। हज़ारों पुस्तकें रोज़ छपती हैं। तरह-तरह के अक्षरों में हज़ारों की तादाद में रोज़ ही समाचार-पत्र छपते रहते हैं। इन सब के मूल में हैं अक्षर। हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि यदि आदमी अक्षरों को न जानता, तो आज इस दुनियाँ का क्या हाल होता।

कोई कह सकता हैं कि हम अक्षरों को अनादि काल से जानते हैं। अक्षरों का ज्ञान हमें किसी ईश्वर से मिला हैं।

पुराने ज़माने के लोग सचमुच ही सोचते थे कि अक्षरों की खोज ईश्वर ने की है। पर आज हम जानते हैं कि अक्षरों की खोज किसी ईश्वर ने नहीं; बल्कि स्वयं आदमी ने की हैं। अब तो हम यह भी जानते हैं कि किन अक्षरों की खोज किस देश में किस समय हुई।

हमारी यह धरती लगभग पाँच अरब साल पुरानी हैं। दो-तीन अरब साल तक इस धरती पर किसी प्रकार के जीव-जंतु नहीं थे। फिर करोडों साल तक केवल

8th STD Hindi Book.indb 46 18-03-2019 17:34:09

जावरों और वनस्यपतियों का ही इस धरती पर राज्य रहा। आदमी ने इस धरती पर कोई पाँच लाख साल पहले जन्म लिया। धीरे-धीरे उसका विकास हुआ।

कोई दस हज़ार साल पहले आदमी ने गाँवों को बसाना शुरू किया। वह खेती करने लगा। वह पत्थरों के औज़ारों का इस्तेमाल करता था। फिर उसने ताँबे और काँसें के बनी औज़ार बनाए।

प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले चित्रों के ज़रिए अपने भाव व्यक्त किए। जैसे, पशुओं पक्षियो, आदमियों आदि के चित्र ! इन चित्र-संकेतों से बाद में भाव-संकेत अस्तित्व में आए। जैसे, एक छोटे वृत्त के चहुँ ओर किरणों की द्योतक रेखाएँ खींचने पर 'सूर्य' का चित्र बन जाता था। बाद में यही चित्र 'ताप' यो 'धूप' का द्योतक बन गया। इस तरह अनेक भाव-संकेत अस्तित्व में आए।

तब जाकर काफ़ी बाद में आदमी ने अक्षरों की खोज की। अक्षरों की खोज के सिलसिले को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। केवल छह हज़ार साल।

अक्षरों की खोज के साथ एक नये युग की शुरूआत हुई। आदमी अपने विचार और अपने हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा। तब से मानव को 'सभ्य' कहा जाने लगा। आदमी ने जबसे लिखना शुरू किया तबसे 'इतिहास' आरंभ हुआ।

किसी भी कौम या देश का इतिहास तब से शुरू होता हैं जब से आदमी के लिखे हुए लेख मिलने लग जाते है। इस प्रकार, इतिहास को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। उसके पहले के काल को 'प्रागैतिहासिक' काल यानी इतिहास के पहले का काल कहते हैं।

अतः हम देखते हैं कि यदि आदमी अक्षरों की खोज़ नहीं करता तो आज हम इतिहास को न जाने हज़ार सालों में आदमी किस प्रकार रहता था, क्या-क्या सोचता था, कौन-कौन राजा हुए इत्यादि।

अक्षरों की खोज़ मनुष्य की सबसे बड़ी खोज है अक्षरों की खोज़ करने के बाद ही मनुष्य अपने विचारों को लिखकर रखने लगा। इस प्रकार, एक पीढ़ी के ज्ञान का

8th STD Hindi Book.indb 47 18-03-2019 17:34:09

इस्तेमाल दूसरी पीढ़ी अक्षरों की खोज करने लगी । अक्षरों की खोज करने के बाद पिछले छह हज़ार सालों में मानव जाति का तेज़ी से विकास हुआ ।

यह महत्व है अक्षरों का और उनसे बनी हुई लिपियों का अतः हम सबको अक्षरों की कहानी मालूम होनी चाहिए । आज जिन अक्षरों को हम पढ़ते या लिखते हैं वे कब बनाए गए, कहाँ बने और किसने बनाए, यह जानना ज़रूरी है भी ।

अभ्यास

I. (अ) कठिन शब्दार्थः

1. अक्षर – वर्ण
2. हाल – दशा
3. सचमुच – वास्तव में
4. लगभग – करीब
5. साल – वर्ष
6. व्यक्त करना – प्रकट करना
7. शुरू करना – आरंभ करना
8. द्योतक – प्रतीक
9. अस्तित्व - स्थाई
10. पीढी – परंपरा
11. खोज - तलाशा

(आ) निम्नलिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए ।

1. अक्षर
2. सचमुच
3. शुरू करना
4. खोज
5. पीढ़ी
6. व्यक्त करना

II. प्रश्नों का उत्तर दीजिए –

1. पाठ में क्यों ऐसा कहा गया है कि अक्षरों के साथ नए युग की शुरूआत हुई?

2. अक्षरों की खोज का सिलसिला कब और कैसे शुरू हुआ?

3. अक्षरों के ज्ञान से पूर्व मनुष्य अपनी बात को दूर-दूर के इलाकों तक पहुँचाने के लिए किन-किन माध्यमों का सहारा लेता था?

8th STD Hindi Book.indb 48 18-03-2019 17:34:09

III. उचित शब्द चुनकर खाली जगह भरिए –

1. पुराने ज़माने में लोग सोचते थे कि अक्षरों की खोज _____ ने की हैं।

1. मनुष्य 2. ईश्वर 3. मूल निवासी 4. कोई ओर

2. आदमी ने जब से अक्षरों की खोज शुरू किया तब से _____ आरंभ हुआ।

1. रसायन शास्त्र 2. इतिहास 3. हिसाब 4. इलाज

3. हम देखते हैं कि यदि आदमी अक्षरों की खोज नहीं करता तो आज हम _____ को न जान पाते ।

1. अर्थ शास्त्र 2. भूगोल 3. इतिहास 4. विज्ञान शास्त्र

4. आदमी ने इस धरती पर कोई _____ लाख साल पहले जन्म लिया धीरे-धीरे उसका विकास हुआ।

1. बीस 2. दस 3. पाँच 4. कई

5. छः हजार साल पहले के काल को _____ काल कहते हैं।

1. प्रागैतिहासिक 2. पाषाण 3. कांस्य 4. आदि

8th STD Hindi Book.indb 49 18-03-2019 17:34:09

गद्य 15 वी.ओ. चिदम्बरम पिल्लै



वी.ओ चिदंबरम पिल्लै का पूरा नाम वल्लियप्पन उलकनाथन चिदम्बरम पिल्लै है। आप तमिलनाडु के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे। आप बालगंगाधर तिलक के शिष्य थे। आप "कप्पलोट्टिय तमिऴन" "चेक्कु इऴुत्त चेम्मल" आदि के नाम से प्रसिद्ध थे। उन्होंने ही पहले पहल अंग्रेजी कंपनी के होड में जहाज खरीदकर कंपनी चलाया था। इसलिए "कप्पलोट्टिय तमिऴन" नाम से प्रसिद्ध हुए। जेल में उन्होंने कोल्हू खींचा। कोल्हू का बैल बने। तमिल में कोल्हू को चेक्कू कहते हैं। अतः उनका नाम चेक्किऴुत्त चेम्मल पडा।

वी.ओ. चिदंबरम् पिल्लै का जन्म 5 सितंबर 1872 के भारत के तमिलनाडु राज्य के अंतर्गत तूत्तुक्कुडि जिला के ओट्टपिडारम में हुआ था। एट्वोकेट उलकनाथन पिल्लै उनके पिता थे और माता का नाम परमाई अम्माल था। उनके तमिल गुरू थे अण्णावी। उनको अपनी दादी से शिवपुराण और दादा से रामायण का ज्ञान मिला। अल्लिकुलम सुब्रह्मण्य पिल्लै से महाभारत का ज्ञान प्राप्त किया।

बचपन में उनके प्रिय मैदानी खेल थे – गोली, कबड्डी, घुड़ सवारी, तैराकी, सर्प की तरह रेंगना, धनुर्विद्या, कुश्ती और शतंरज आदि रहा।

8th STD Hindi Book.indb 50 18-03-2019 17:34:09

चिदंबरम पिल्लै ने सेंट जेवियर हाई स्कूल, काल्ड़ेवेल हाई स्कूल, तूत्तुक्कुडि और हिन्दू कालेज हाई स्कूल आदि में अध्ययन किया। उन्होंने 1894 में वकालत की परीक्षा पास की। 1895 में ओट्टपिडारम में लौट आए और वकालत शुरू कर दी। चेन्नई में उनकी मुलाकात संत रामकृष्णानंदर से हुई। उनसे प्रेरित होकर वे राजनीति क्षेत्र में कूद पडे। सन् 1900 ई.मे. राष्ट्रकवि सुब्रह्मणिय भारती के पक्के मित्र बन गए।

सन् 1890 और 1900 के दशक में भारतीय स्वतंत्रता और स्वदेशी आँदोलन जोर पकडा। उन आंदोलनों के प्रधान नेता थे बालगंगाधर तिलक और लाला लजपतराय ।

ब्रिटिश इंडिया स्टीम नेविगेशन कंपनी ने एकाधिकार व्यापार किया। चिदंबरम ने स्वदेशी स्टीम नेविगेशन कंपनी शुरू की। अक्टूबर 1906 में उन्होंने स्वदेशी स्टीम नेविकेशन कंपनी का पंजीकरण कराया। उस समय कंपनी की पूँजी 10 लाख रूपये थी। हिस्सेदार संख्या 40,000/- थी। देश भक्त हाजी मोहम्मद फ़कीर सेठ 8000/- शेर खरीदकर कम्पनि को 2 लाख सहायता दी। चिदंबरम् के जहाज़ कंपनी की प्रगति देखकर अंग्रेजी कंपनी मुफ़्त की सेवा करना प्रारम्भ की।

चिदंबरम को अंग्रेंज कंपनी के विरुद्ध चलाना असंभव लगा। साथ ही उनपर कई कानूनी प्रतिबंधन भी लगाये गये। उनके ऊपर देश द्रोह का अभियोग लगा और उन्हें दो जन्मो का आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। उनके साथ न तो राजनैतिक कैदी की तरह व्यवहार किया और न तो साधारण कैदी की। बल्कि उनके साथ आजीवन कैदी के समान व्यवहार किया गया। जेल में उनसे कठिन काम लिया गया। इसी कारण उनका स्वास्थ्य बिगड गया। चिदंबर को कोल्हू बैल की तरह जोता गया। अंत में उन्हें 26.12.1912 को जेल से रिहा कर दिया गया। उनको पता चला कि नेविगेशन कंपनी का दीवाला हो गया। उनको मानसिक दुख हुआ। दुखी मन से अपने जहाज़ को ब्रिटिश कंपनी के हाथ बेच दिया।

8th STD Hindi Book.indb 51 18-03-2019 17:34:09

चिदंबरम की याद में उनके जेल में खींचे कोल्हू को चेन्नै के गाँधी मंडप में स्मारक के रूप में रखा गया है। जेल से मुक्त करके कंपनी ने उनको तिरूनेलवेली से बाहर जाने नहीं दिया और वकालत भी करने नहीं दिया।

ऐसे निस्वार्थ महान नेता चिदंबरम पिल्लै के जीवन शैली का अनुकरण करना ही उनके प्रति हमारी श्रद्धांजलियाँ होंगी ।

अभ्यास

I. (अ) कठिन शब्दार्थः

1. सहायता देना – मदद करना
2. प्रगति – उन्नति
3. बिगड जाना – खराब होना
4. व्यवहार – बर्ताव
5. अभियोग – इलजाम
6. याद – स्मरण

(आ) निम्नलिखित कठिन शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

1. सहायता देना
2. बिगड जाना
3. अभियोग
4. प्रगति

II. विलोम शब्द लिखिए –

1. स्वतंत्रता x परतंत्रता
2. के पहले x के बाद
3. स्वदेशी x विदेशी
4. ज्ञान x अज्ञान
5. प्रिय x अप्रिय
6. प्राप्त x अप्राप्त
7. विद्या x अविद्या

III. खाली जगह भरिए –

1. चिदंबरम पिल्लै बालगंगाधर तिलक के _____ थे।

2. जेल में उन्होंने (चिदंबरम ने) कोल्हू _____ का काम किया।

3. चिदंबरम के तमिल गुरू _____थे ।

8th STD Hindi Book.indb 52 18-03-2019 17:34:10

4. चिदंबरम ने _____ स्टीम नेविगेशन कंपनी शुरू किया ।

5. चिदंबरम पर कई कानूनी _____ भी लगाये गये।

IV. प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. वि.ओ चिदंबर पिल्लै के माता-पिता का नाम क्या है?

2. चिदंबरम पिल्लै का जन्म कहाँ हुआ ?

3. चिदंबरम किन नामों से प्रसिद्ध थे? क्यों?

4. चिदंबरम को शिव, राम और महाभारत का ज्ञान किन-किन से मिला?

5. चिदंबरम पिल्लै को क्यों अपना जहाज बेचना पडा?

6. चिदंबरम पिल्लै को कितने साल की सजा मिली?

7. चिदंबरम का स्वास्थ्य क्यों बिगड गया?

8th STD Hindi Book.indb 53 18-03-2019 17:34:10

कहानी 16 मन चंगा तो कठौती में गंगा

हिन्दी में एक प्रसिद्ध कहावत है – 'मन चंगा तो कठौती में गंगा।' इसका अर्थ होता है कि यदि आदमी का मन शुद्ध हो, तो उसे गंगा नहाने की ज़रूरत नहीं। इस कहावत की कथा इस प्रकार है –

काशी में रैदास नामक एक भक्त थे। वे जाति के चमार थे और लोगों के जूते मरम्मत करके अपना गुज़र करने थे ।

एक दिन रैदास अपने घर के बाहर सड़क पर बैठे जूते गांठ रहे थे। उसी रास्ते से एक पंडितजी गंगा-स्नान करने जा रहे थे। चलते-चलते उनका जूता फट गया। पंडित ने रैदास को देखा, तो उसके पास चले आये और बोले – भाई, मैं गंगा-स्नान करने जा रहा हूँ। मेरा जूता फट गया है। ज़रा जल्दी से गांठ दो।

रैदास किसी दूसरे मुसाफ़िर का जूता गांठ रहे थे। बोले – एक काम हाथ में ले चुका हूँ। उसे पूरा करने के बाद आपका जूता गांठ दूँगा ।

मुसाफ़िर का जूता गांठने के बाद रैदास पंडितजी का जूता गांठने लगे। पंडितजी पास ही एक पेड़ के नीचे खड़े हो गये ।

पंडितजी बोले – "भाई! आज ग्रहण है। ग्रहण के समय गंगा-स्नान करने से बहुत पुण्य मिलता है। मैं ग्रहण के समय गंगा में स्नान करने के लिए दस कोस से पैदल चला आ रहा हूँ। और तुम गंगाजी के इतने पास रहकर भी गंगा-स्नान करने नहीं जाते। क्या आज भी तुम नहाने नहीं जाओगे ?"

रैदास बोले – "महाराज, मैं गरीब आदमी हूँ। गंगा नहाने से मेरा पेट कैसे भरेगा? मैं गंगा नहाता रहूँ, तो मेरे बाल-बच्चों को रोटियाँ कौन देगा?"

पंडितजी ने कहा – तुम बड़े गँवार हो। इसीलिए ऐसी बात कर रहे हो।

रैदास चुपचाप पंडितजी की बातें सुनाता रहा। उसका कोई जवाब नहीं दिया। जब जूते की मरम्मत हो चुकी, तो पंडितजी के आगे रखकर बोले – "लीजिए, आपका

8th STD Hindi Book.indb 54 18-03-2019 17:34:10

जूता ठीक हो गया ।"

पंडितजी ने जूता पहन लिया । फिर बटुए से दो पैसे निकालकर रैदास को देने लगे।

रैदास ने कहा – मैं आपसे मजूरी नहीं लेना चाहता ।

पंडितजी ने अचरज में आकर पूछा – क्यों?

रैदास – "बदले में आप मेरा एक काम कर दीजिए ।"

पंडितजी – "क्या काम है?"

रैदास ने अपने बटुए से दो चार सुपारियाँ निकालकर पंडितजी को दीं और कहा– आप इन्हें मेरी ओर से गंगा मैया को भेंट में दे देना । लेकिन एक बात, जब गंगा माई अपना हाथ निकालकर सुपारी लें तभी देना; पानी में मत फेंकना ।

पंडितजी ने मन ही मन सोचा, यह कैसी मूर्खता की बात करता है; लेकिन रास्ता जल्दी तय करना था, इसलिए रैदास से बहस में न पड़कर सुपारियाँ थैली में रख लीं और आगे चले ।

नदी के किनारे पहुँचकर पंडितजी ने स्नान किया, पूजा – पाठ किया । फिर चलने को तैयार हुए । इसी समय अन्हें रैदास की सुपारियों की याद आयी । उन्होंने सोचा कि इन्हें पानी में फेंककर चल दूँ । पर रैदास ने कहा था कि जब गंगा माई हाथ निकालकर सुपारियाँ ले तभी देना, पानी में न फेंकना । पंडितजी को विश्वास तो नहीं था, लेकिन वे गंगाजी के किनारे जाकर बोले – हे गंगा माता ! ये रैदास की सुपारियाँ हैं । ले लो ।

पंडित जी के इतना कहते ही गंगाजी से एक हाथ निकला और सुपारियाँ लेकर पानी में गायब हो गया । इसके बाद दूसरा हाथ निकला । उसमें सोने का एक कंगन था। इसी समय पानी के भीतर से आवाज़ आयी – "यह कंगन रैदास को दे देना । कहना कि गंगाजी ने तुम्हारी भेंट स्वीकार कर ली हैं।"

पंडितजी यह देखकर अचरज में पड़ गये । इधर सोने का कंगन देखकर उनके मन में लालच पैदा हो गया । वे रैदास के पास न जाकर सीधे अपने घर गये । घर पहुँचकर उन्होंने ब्राह्मणी को वह कंगन दिखाया और सारी कहानी कह सुनायी । कंगन देखकर ब्राह्मणी इतना खुश हुई कि उसने उस कथा की ओर ध्यान नहीं दिया । वह सोचने लगी, वाह! यह कंगन कितना सुन्दर है ! यह शुद्ध सोने का है और इसमें जबाहिरात भी जड़े

8th STD Hindi Book.indb 55 18-03-2019 17:34:10

हैं। इसे बेचने से इतना धन मिलेगा कि हमारी गरीबी दूर हो जाएगी।

ब्राह्मणी ने अपने पति से कहा – इसे राजा के पास ले जाओ। राजा कंगन को देखकर बहुत खुश होंगे और तुमको अच्छा इनाम देंगे।

पंडितजी कंगन को लेकर राजा के दरबार में पहुँचे। राजा सचमुच उस सुन्दर कंगन को देखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने पंडितजी को एक हज़ार रुपया इनाम दिया और कंगन अपने पास रख लिया। जब रानी ने कंगन देखा, तो वह उसपर लट्टू हो गयी। उसने उसे अपने हाथ में पहन लिया। सबने उसकी तारीफ़ करते हुए कहा – "रानीजी, आपका दूसरा हाथ सूना लगता है। इसी तरह का एक कंगन और हो, तो दोनों हाथों की शोभा बढ़ जाएगी।" यह सुनकर राजा ने हुकुम दिया कि जाकर फ़ौरन पंडितजी को बुला लाओ।

पंडितजी एक हज़ार मुहरे पाकर खुशी से उछलते हुए घर पहुँचे। मुहरे अपनी स्त्री के सामने रखे ही थे कि इतने में राजा का सिपाही आ पहुँचा।

सिपाही पंडित को राजा के पास ले गया। राजा ने कहा – इस कंगन का जोड़ा ले आओ, नहीं तो तुम्हें जेल में डाल दूँगा।

राजा की बात सुनकर बेचारे पंडितजी बहुत घबराये। उन्होंने कंगन पाने का सारा हाल कह सुनाया।

पंडितजी की बातों पर राजा को ज़रा भी विश्वास न हुआ। उन्होंने कहा – हम यह सब डपोरसंख की कहानी सुनना नहीं चाहते। तुम जल्दी जाकर दूसरा कंगन लाओ, नहीं तो कड़ी सज़ा दी जाएगी। कंगन कभी एक नहीं होता। इसका दूसरा जोड़ा भी ज़रूर होगा।

पंडितजी राजा के दिये हुए रुपये लेकर भक्त रैदास के पास पहुँचे। उनके सामने मुहरों की थैली रखकर सारी कथा कह सुनायी। फिर रोकर बोले – भगतजी, किसी तरह जान बचाईये। ये मुहरे लीजिये और जाकर गंगाजी से दूसरा कंगन माँग लाईये। दूसरे कंगन के लिए भी जो मिलेगा, उसे आपके चरणों पर अर्पित कर दूँगा। किसी तरह इस गरीब पंडित की मदद कीजिए।

भक्त रैदास बोले – पंडितजी, मुझे रुपये नहीं चाहिए। ये रुपये आप ही पास रखिये। भगवान मुझे रोज़ जितनी मजूरी देते हैं, वही मेरे लिए काफ़ी है। गंगा माई तक

8th STD Hindi Book.indb 56 18-03-2019 17:34:10

जाने के लिए मेरे पास समय नहीं है ।

ब्राह्मण घिघियाकर बोले – तो मेरी जान कैसे बचेगी ? कंगन न मिलने पर राजा मुझे जेल में डाल देंगे । बेचारी ब्राह्मणी रो-रोकर मर जाएगी ।

रैदास ने कहा – आप घबराइये नहीं । मैं आपकी मदद अवश्य करूँगा ।

यह कहकर रैदास ने चाय भिगोनेवाली कठौती पर कपड़ा डाला और बोले – "मन चंगा तो कठौती में गंगा । हे गंगा मइया, तू इस ब्राह्मण पर कृपा कर!"

कपड़ा उठाते ही कठौती में सोने का एक कंगन चमचमाता हुआ दिखाई पड़ा । वह ठीक उसी कंगन के जैसा था, जिसे गंगा माई ने पहले दिया था ।

रैदास ने कंगन निकालकर ब्राह्मण को दिया और कहा – यह लीजिए और राजा को दे दीजिए ।

पंडितजी रैदास के पैरों पर गिर पड़े और अपने अपराध के लिए क्षमा माँगी । उन्होंने वे हजार रुपये लेने के लिए रैदास पर बहुत ज़ोर दिया, पर भक्त रैदास ने कहा –

"मुझे भगवान जितनी मजूरी देता है, मैं उसीसे संतुष्ट हूँ । उससे ज़्यादा मुझे कुछ नहीं चाहिए ।"

अभ्यास

I. एक या दो वाक्यों में प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. रैदास कौन थे ?

2. पंडितजी ग्रहण के दिन कहाँ जा रहे थे?

3. रैदास ने पंडितजी को सुपारियाँ देकर क्या कहा ?

4. गंगा ने पंड़ितजी से सुपारियाँ लेकर क्या दिया ?

5. पंडित ने रैदास से क्या प्रार्थना की?

6. भक्त रैदास ने पंडितजी से क्या कहा ?

8th STD Hindi Book.indb 57 18-03-2019 17:34:10

कहानी 17 त्याग का सुख

एक विद्वान ब्राह्मण वाराणसी में रहता था। वह विद्वान ही नहीं, संत स्वभाव का भी था। उसके बहुत-से शिष्य थे जिन्हें वह पढ़ाता था और स्वयं त्यागी का जीवन व्यतीत करता था। संसार में वह उसी तरह रहता था जिस प्रकार कमल के पत्ते तालाब में रहते हैं। जल में रहते हुए भी वे जल से अलग ही रहते हैं। संसार में रहकर भी संसार की बुराइयों से बचकर रहना बहुत बड़ी तपस्या है। वह ब्राह्मण तेजस्वी और बड़ा धनी था।

जब उसकी अवस्था अधिक हो गई तो उसने सोचा कि सन्यास लेकर अब परलोक की चिन्ता करनी चाहिए। उसने एक दिन गृहस्थाश्रम का त्याग करके तपस्या करने के लिए सन्यास-आश्रम को स्वीकार कर लिया। अब उसका मन और भी उचट गया। वह अपने शिष्यों के साथ हिमालय की ओर चला गया। हिमालय के शान्त और पवित्र वातावरण में बैठकर वह अपने शिष्यों को उपदेश देने लगा तथा स्वयम् तपस्या करने लगा। उसकी सभी लालसाएँ मिट चुकी थी – बस, यही लालसा बाकी थी – कैसे संसार का कल्याण हो और इस नाशवान शरीर का उद्धार हो। वह बहुत दिनो तक हिमालय में रहकर एक दिन काशी नगरी लौटा। उसके साथ बहुत-से शिष्य थे। काशीराजा ने बड़ी श्रद्धा से उस संत का आदर-सत्कार किया। एक वन में संत ने अपना डेरा डाला। राजा नित्य संत के दर्शन-पूजन करने जाता था। एक दिन संत ने कहा कि अब मैं फिर हिमालय की ओर लौटना चाहता हूँ।

राजा हाथ जोड़कर बोला – "आप बहुत वृद्ध हो गये हैं। आप यहीं रहें और अपने शिष्यों को तपस्या के लिए हिमालय जाने का हुक्म दे दें।"

वृद्ध संत ने राजा की बात मान ली और अपने प्रधान शिष्य को आदेश दिया कि वह दूसरे सैकड़ों शिष्यों के साथ तपस्या के लिए हिमालय चला जाय।

गुरु की आज्ञा मिलते ही प्रधान शिष्य के साथ सभी शिष्य हिमालय की ओर चले

8th STD Hindi Book.indb 58 18-03-2019 17:34:10

और वृद्ध आचार्य काशी में ही रह गये ।

वह प्रधान शिष्य एक बड़ा संत था और उसने कठोर तपस्या भी की थी। हिमालय में बहुत दिनों तक रहने के बाद उस शिष्य को इच्छा हुई कि वह अपने आचार्य के दर्शन करे । उसने अपने साथियों से कहा – भाई, मैं काशी जाकर आचार्य के दर्शन करना चाहता हूँ । आप यही रहें और मैं दर्शन करके लौटूँगा ।

वह हिमालय से निकलकर काशी पहुँचा । आचार्य बहुत ही वृद्ध हो गये थे तथा उनकी तपस्या भी पूरी हो चली थी। शिष्य अपने गुरु के दर्शन करके बहुत ही तृप्त हुआ। वह थका था, इसलिए गुरु की आज्ञा लेकर वहीं पर विश्राम करने लगा ।

इसी समय काशी – नरेश अपने मन्त्रियों और अंग-रक्षकों के साथ आया । आचार्य को प्रणाम करके वह धरती पर ही बैठ गया । आचार्य के आश्रम में जितने शिष्य थे, उन सभी ने खड़े होकर राजा का स्वागत किया; किन्तु वह शिष्य अपनी चटाई से नहीं उठा और लेटे ही लेटे, आनन्द से बोलता रहा – अहा! बढ़ा आनन्द है ! बडा सुख है। बड़ा आराम है!!

राजा को उसकी यह हरकत बुरी लगी । राजा सदा सम्मान का भूखा रहता था और उसे सम्मान का बडा ध्यान रहता था । इसलिए वह अपने आपको रोक न सका और दूसरे दिन आचार्य से कहने लगा - भगवान आपका यह शिष्य बहुत ही नासमझ है । यह उठकर बैठा तक नहीं और लेटे ही लेटे आँखें बन्द कर बड़बड़ाता रहा – अहा, बड़ा आनन्द है, बड़ा सुख है, बहुत आराम है । यह भी कोई बात है? मैं इस प्रदेश का राजा हूँ और राजा का सम्मान तो होना ही चाहिए ।

आचार्य राजा की बातें सुनकर बोले – महाराज मेरा यह शिष्य, जिसपर आप नाराज हो रहे हैं, एक बहुत ही विशाल राज्य का राजा था । भोग से ऊबकर त्याग की ओर आया और आज तपस्या के बल पर यह संत बन गया है । उसने आपको देखकर कहा – बडा सुख हैं, बडा आनन्द है, बहुत आराम है । आपने इसके इस तरह कहने का कोई तात्पर्य समझा? वह उठा नहीं, इसका रहस्य समझा?

राजा विनयपूर्वक बोला – नहीं देव । आचार्य कहने लगे – "मेरा यह शिष्य जब राजा था, तब इसके भी मंत्री, सेना, अंगरक्षक, महल, सुख, सम्मान – सभी कुछ थे;

8th STD Hindi Book.indb 59 18-03-2019 17:34:10

किन्तु सब कुछ होते हुए भी यह कभी सुख की नींद नहीं सो सका। आज युद्ध है तो कल प्रजा में असंतोष, आज अकाल है तो कल बाढ़ की तबाही। बेचारा सिंहासन पर बैठकर दिन-रात झख मारता ही रहा और अन्त में ऐसा ऊबा कि राज्य-सुख को लात मारकर भाग निकला। आज यह सन्यासी है और कह रहा है कि सब कुछ त्यागकर और उस ऊबड-खाबड धरती पर लेटकर सच्चा सुख उसे प्राप्त हुआ। सुख तब नसीब नहीं होता था जब नरम गद्दे पर सोता था और विशाल राज्य का स्वामी था। यह शिष्य अभद्र नहीं है, परम ज्ञानी और त्यागी है।"

आचार्य के वचन सुनकर राजा की आँखें खुल गई। वह क्षमा-याचना करने लगा।

सच्ची बात यह है कि भोग में लिपटे हुए मानव को सुख कहाँ? शान्ति कहाँ? सच्चा सुख तो वहीं है, जहाँ त्याग है। गहरी नींद तो तभी आती है, जब हृदय में खटका नहीं होता और भय नहीं रहता। शान्त और भय रहित हृदय तभी होता है, जब इन सब कुछ त्यागकर आनन्द से लोक-कल्याण के कार्य में लग जाते हैं।

अभ्यास

I. एक या दो वाक्यों में प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. काशी का राजा किसके दर्शन के लिए रोज आश्रम जाता था?
2. संत का प्रधान शिष्य कहाँ से आया था और वह आश्रम में क्या कर रहा था?
3. काशी का राजा क्यों नाराज हुआ?
4. संत ने राजा को क्या समझाया?
5. राजा को कैसे मालूम हुआ कि त्याग में ही सुख है?

8th STD Hindi Book.indb 60 18-03-2019 17:34:10

कहानी 18 कुत्ते की पूँछ

किसी देश में एक अमीर आदमी रहता था । उसके यहाँ बहुत नौकर-चाकर थे। सभी नौकर उस अमीर से बहुत डरते थे और अपना-अपना काम दिल लगाकर बड़ी मेहनत के साथ करते थे । लेकिन वह आदमी कभी किसीसे संतुष्ट नहीं रहता था। वह समझता था कि सब नौकर बड़े ही सुस्त हैं, कोई भी जल्दी-जल्दी काम नहीं करता। मेहनत नौकर की खोज में उसने कई बार नौकर बदले भी, पर उसे तृप्ति नहीं हुई ।

अमीर अब चिंता में पड़ा । उसको कोई रास्ता दिखाई नहीं पड़ा । उसने निश्चय कर लिया कि अब ईश्वर से दुआ माँगूँगा । वह बड़ी देर तक ईश्वर के ध्यान में लगा रहा। ध्यान में वह इस तरह डूब गया कि खाना-पीना भी भूल गया ।

ईश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी । उन्होंने सोचा कि अच्छा है, अब इससे एक अच्छा तमाशा ही करें । फिर उन्होंने उस अमीर आदमी को दर्शन दिये और कहा – बेटा, मैं तुम्हारी प्रार्थना से खुश हूँ । बोलो, तुमको क्या चाहिए?

अमीर ने ईश्वर को नमस्कार किया और कहा – मुझे एक ऐसा नौकर दीजिये जो बहुत फुर्तिला हो और सब कामों को जल्दी-जल्दी कर सके । ईश्वर 'तथास्तु' कहकर गायब हो गये ।

थोड़ी देर के बाद अमीर आदमी के सामने एक मोटा-ताज़ा भूत कहीं से आकर खडा हो गया । उसने अमीर आदमी को प्रणाम करके कहा – हुजूर, मुझे भगवान ने आपके पास काम करने के लिए भेजा है । मैं आपके कामों को जल्दी-जल्दी कर दूँगा । मुझे न भोजन चाहिए, न वेतन, लेकिन आपको मुझे लगातार काम देते रहना होगा। अगर आप काम नहीं दे सकेंगे, तो मैं आपको पकड़कर खा जाऊँगा ।

अमीर अपने नये नौकर को काम देने लगा । नौकर हर एक काम को बात की बात में पूरा कर देता था और फिर काम माँगता था । यहाँ तक कि उस नौकर ने अमीर आदमी के लिए कई बडे-बडे महल बनवा दिये और उसका खज़ाना रुपये-पैसे से पूरी तरह भर

8th STD Hindi Book.indb 61 18-03-2019 17:34:10

दिया। इधर अमीर आदमी को हर दम यही सोचते रहना पड़ता था कि अब नौकर को कौन-सा काम दूँ? अब वह नौकर से तंग आ गया था और अपने लालच पर उसको बहुत दुख हो रहा था।

एक दिन अमीर आदमी भूत को कोई काम नहीं दे सका। फिर वह भूत मालिक को ही खाने को तैयार हो गया। तब तो वह उससे डरकर भागने लगा और भूत उसका पीछा करने लगा।

भगवान का नाम लेकर वह भागता रहा। भागते-भागते अमीर की नज़र एक कुत्ते पर पडी। कुत्ते को देखते ही अमीर को एक उपाय सूझ पड़ा। वह रुक गया और जब भूत पास आ गया, तब उसको आज्ञा दी – जाओ, इस कुत्ते की टेढ़ी पूँछ सीधी करो। भूत ने कुत्ते को पकड़ा और उसकी पूँछ सीधी की, लेकिन जैसे ही पूँछ हाथ से छूटी, वह फिर टेढ़ी हो गयी। भूत ने लाख कोशिश की, पर सब फ़िज़ूल। भला, कुत्ते की पूँछ कहीं सीधी हो सकती हैं।

वह भूत बड़ा लज्जित हुआ। वह अपने मालिक से आज्ञा लेकर अपनी जगह चला गया। फिर उस दिन से अमीर आदमी अपने मेहनती नौकरों के काम से बहुत संतुष्ट होकर रहने लगा।

अभ्यास

I. एक या दो वाक्यों में प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. अमीर आदमी कहाँ रहता था ?

2. अमीर आदमी किन से तृप्त नहीं होता था?

3. अमीर आदमी ने ईश्वर से क्या माँगा?

4. अमीर आदमी किस प्रकार के नौकर को चाहता था?

5. भूत ने अमीर आदमी से क्या कहा?

6. अमीर आदमी को छोड़कर भूत क्यों चला गया ?

8th STD Hindi Book.indb 62 18-03-2019 17:34:10

कहानी 19 कलई खुल गयी

एक दिन की बात है। सबेरे का समय था। बादशाह अकबर गद्दी पर बैठा था। पास ही वज़ीर था। सभी दरबारी मौज़ूद थे। किसी विषय पर चर्चा हो रही थी कि इसी बीच में एक बूढ़ा आदमी दरबार में हाज़िर हुआ। यह देखने में ज़रा घमंडी मालूम होता था। यह बादशाह के सामने सिर झुकाकर बोला-बादशाह! मैं देश के कोने-कोने में घूमता हूँ। मैं कई भाषाएँ जानता हूँ। मुझे हिन्दुस्तान की कई भाषाएँ इतनी अच्छी तरह मालूम हैं कि कोई भी मेरी असली मातृभाषा अब तक पहचान नहीं सका। आपकी मर्ज़ी हो तो परीक्षा कर देखें।

बूढ़े की बातें सुनकर बादशाह के दिल में थोड़ा अचरज पैदा हुआ। वह तनकर बैठ गया और अपने दरबारियों से बोला-शायरो, आप लोगों में कौन ऐसा है, जो यह बता सके कि इनकी मातृभाषा कौन-सी हैं?

इसपर अलग-अलग जवान बोलनेवाले पंडित एक-एक करके उस आदमी के साथ बातचीत करने लगे। बंगाली पंडित उसकी मातृभाषा बंगला कहता, तो मराठी विद्वान उसकी मातृभाषा मराठी बताता। गुजराती पंडित साबित करता कि उसकी मातृभाषा गुजराती है, तो कन्नड़ का विद्वान क़सम खाता कि उसकी मातृभाषा कन्नड़ ही है। इस तरह भिन्न-भिन्न भाषावाले अपनी-अपनी भाषा को उसकी मातृभाषा बताते थे। लेकिन किसी को उसकी मातृभाषा का पता न चला।

बादशाह और वज़ीर मुस्कुराते हुए यह सब तमाशा देख रहे थे। इतने में भोजन का समय हुआ। सभा विसर्जित हुई। सब खाना खाने और आराम करने चले गये। उस आदमी की जीत हुई, वह खुशी से फूला न समाया।

खूब भोजन करके वह एक पलंग पर आराम करने के लिए लेट गया। लेटते ही उसकी आँखें लग गयीं। वह खुर्राटे ले रहा था कि थोड़ी देर में बादशाह और वज़ीर उस तरफ़ से निकले। उन्होंने देखा कि बूढ़ा मीठी नींद ले रहा हैं। यकायक वज़ीर को एक

8th STD Hindi Book.indb 63 18-03-2019 17:34:10

उपाय सूझा। उन्होंने उसकी बगल में ज़ोर से एक घूँसा जमा दिया। तुरंत बूढ़ा घबराकर 'एवरूड़ा वाडु' चीखता हुआ उठ बैठा। ज्योंही उसके मुँह से यह बात निकली त्योंहि बादशाह और वज़ीर ठठाकर हँस पड़े।

वज़ीर बोला –अजी पंडितजी ! आपकी मातृभाषा तेलुगु है।

बूढ़े की कलई साफ़-साफ़ खुल गयी। यह मन ही मन सोचने लगा – सच हैं, मातृभाषा को कोई छिपा या भुला नहीं सकता।

अभ्यास

I. एक या दो वाक्यों में प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. बूढे ने अमीर से क्या कहा ?

2. अकबर ने दरबारियों से क्या कहा?

3. पंडितों ने बूढ़े की मातृभाषा क्या बताया ?

4. वज़ीर ने बूढ़े की बगल में घूँसा क्यों लगाया?

5. घूँसा खाकर बूढे के मुँह से कौन-सा शब्द निकला ?

6. किसे कोई छिपा या भुला नहीं सकता?

8th STD Hindi Book.indb 64 18-03-2019 17:34:10

कहानी 20 धन की महिमा

बहुत दिनों की बात है। वाराणसी में एक गृहस्थ रहता था। वह वृद्ध था, किन्तु बड़ा धनवान था। उसकी स्त्री मर चुकी थी। उस धनि वृद्ध की पहली स्त्री से कोई बाल-बच्चा न था। घर में धन कमी न थी। उसने सोचा – "यदि मैं मर गया तो मेरा यह धन बर्बाद हो जायगा; क्योंकि कोई अपना नहीं हैं।" यही सोचकर उसने दूसरा विवाह किया, पर उसकी उम्र विवाह करने के योग्य न थी।

विवाह करने के कुछ दिनों के बाद उसके एक पुत्र का जन्म हुआ। पुत्र का मुँह देखकर उस वृद्ध का मन शान्त हो गया। पुत्र की लालसा से ही उसने विवाह किया था और उसकी लालसा पूरी हो गई।

काल की गति कौन जानता हैं? उसने सोचा – "अब मैं वृद्ध हो गया। स्त्री नासमझ हैं और बच्चा अभी दूधमुँहा है। यदि मैं मर जाऊँ तो मेरी नासमझ स्त्री मेरे धन की रक्षा कर नहीं सकेगी और बच्चा तो अभी बिलकुल ही अबोध है।"

वह दिन रात विकल रहता था और इसी चिन्ता में घुल जाता था कि यदि मेरे प्राण-पखेरू उड़ गये तो नासमझ जवान स्त्री और नन्हें पुत्र का क्या हाल होगा? मेरी सारी कमाई चौपट हो जायगी तथा जब पुत्र जवान होगा तो उसके हाथ कुछ भी नहीं लगेगा। इस चिन्ता ने उसे घुला-घुलाकर अधमरा कर दिया।

जब उसे विश्वास हो गया कि उसके जीवन के दिन बिलकुल ही करीब आ गये हैं। तब उसका धीरज बिलकुल छूट गया। उस वृद्ध का एक पुराना नौकर था जिसका नाम था "नन्द"।

नन्द उस वृद्ध का विश्वस्त नौकर और बडा ईमानदार भी थ।। उसके इस गुण को उसका वृद्ध मालिक जानता था। एक दिन उस धनी वृद्ध ने नन्द से कहा – "नन्द, यदि मैं मर गया तो क्या होगा।" नन्द अनुभवी था। वह बोला – "स्वामी, आपकी कमाई मिट्टी में मिल जायगी; क्योंकि आपकी स्त्री अभी जवान और नासमझ हैं। तथा पुत्र दूध-पीता

8th STD Hindi Book.indb 65 18-03-2019 17:34:10

बच्चा है। धन की रक्षा दोनों में से कोई भी नहीं कर सकते।"

वह धनी वृद्ध इधर-उधर देखकर धीरे से बोला – "मुझे एक उपाय सूझा है। बतलाता हूँ। मेरा विचार है कि मैं अपने धन को घने वन में जाकर कहीं गाड़ दूँ। तुम किसीको भी मत बतलाना। जब मेरा लड़का बड़ा हो जाय तो उसे वह धन दे देना। बोलो, यह मदद कर सकोगे?"

नन्द ने हाथ जोड़कर कहा – "आप मेरे स्वामी हैं। मैं आपके धन की रक्षा अन्तिम साँस तक करूँगा। आपने सुन्दर उपाय सोचा है।"

वृदध अपना धन लेकर एक भयानक वन में अपने सेवक नन्द के साथ गया और एक गहरा गड़ढा खोदकर उसे छिपा दिया। अपना अन्तिम निश्चय पूरा करके वह वृद्ध एक दिन सूखपूर्वक चल बसा।

दिन बीतने लगे और बच्चा भी बड़ा होने लगा। नन्द ने किसीको भी यह पता लगने न दिया कि वह एक बड़ी सम्पत्ति का रक्षक हैं। जब वह लड़का बड़ा बन गया तो एक दिन नन्द ने कहा – "आप मेरे स्वामी के पुत्र और मेरे भी मालिक हैं। आपके स्वर्गवासी पिता ने बहुत-सा धन वन में छिपा दिया है। अब मैं चाहता हूँ कि आपकी सम्पत्ति आपको सौंपकर मैं भी शान्ति लाभ करूँ। मेरे हृदय पर का भार उतर जायगा। आप चलिए और अपना धन सँभाल लीजिए।"

चलते-चलते दोनों भयानक वन में पहुँचे। नन्द एक स्थान पर खड़ा हो गया और वह गरज उठा। लड़का डरकर पीछे हट गया। नन्द पागलों की तरह अपने स्वामी को गालियाँ देने लगा। वह लड़का डर गया और नन्द के साथ घर लौट आया। उस स्थान से हटते ही नन्द का दिमाग ठीक हो गया। वह यह भी भूल गया कि वह क्या कुछ बक रहा था।

दूसरे दिन भी यही हाल हुआ। लगातार एक सप्ताह तक नन्द उस लड़के को अपने साथ ले जाता था तथा अंटसंट बककर वापस आता था। वह लड़का ऊब उठा किन्तु इस ख्याल से सब कुछ सहता जाता कि कई नाराज़ होकर नन्द धन का पता बतलाने से इनकार न कर दे।

8th STD Hindi Book.indb 66 18-03-2019 17:34:10

एक दिन उस लड़के ने अपने एक बुद्धिमान मित्र को सारी कहानी सुनाई। मित्र बोला – "तुम भी बडे मूर्ख हो। तुम नहीं जानते कि धन में कितनी गर्मी होती है। जन्म का गरीब नन्द जब गड़े हुए धन के ऊपर जाकर खडा हो जाता है तब उसका दिमाग धन की गर्मी से बौखला उठता। तुम अब नन्द को साथ लेकर जाओ और जैसे ही वह उस स्थान पर खड़ा होकर गरजे, तुम उसे खींचकर अलग कर दो और भूमि खोदकर धन निकाल लो। तुम्हारे पिता ने अपना धन वहीं पर गाड़ रखा था, जहाँ पर पहुँचते ही नन्द पागल हो उठता है।"

अपने मित्र की बातें सुनते ही उसकी आँखें खुल गईं। दूसरे दिन वह फ़ावड़ा आदि लेकर नन्द के साथ वन में पहुँचा। नन्द फिर उसी जगह पर जाकर खड़ा हो गयो जहाँ वह पहले खड़ा होते ही सनक उठता था। खड़े होते ही वह फिर बड़बड़ाने लगा। उस नौजवान ने नन्द को पकड़कर हटाया और धरती खोदने लगा। थोड़े परिश्रम के बाद उसे अपने पिता का छिपाया हुआ खज़ाना मिल गया।

धन में कितनी गरमी होती है और कितना पागलपन होता हैं? पराये के धन पर खड़े होने का हाल यह है तो अपने धन का वर्णन करना बड़ा कठिन हैं।

अभ्यास

I. एक या दो वाक्यों में प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. बूढे ने अपने धन को घने वन में गाडने का निर्णय क्यों किया?

2. बूढे ने अपने नौकर नंद से क्या कहा?

3. बूढे का लडका जब बडा हुआ, तब नंद ने क्या किया?

4. बूढे के लड़के ने गाडे हुए धन को कैसे पाया?

5. वारणासी में कौन रहता था? वह कैसा स्वाभाव का था?

8th STD Hindi Book.indb 67 18-03-2019 17:34:10

निबंध 21 समाचार – पत्र

समाचार-पत्र संसार के साथ हमारा संबंध जोड़ते हैं। उनमें संसार के भिन्न-भिन्न स्थानों के समाचार प्रकाशित होते हैं। वे हमारे राष्ट्रीय जीवन के निर्माण का कार्य करते हैं।

समाचार-पत्रों से व्यापार में भी सुविधा होती है। छोटे से छोटे दूकानदार से लेकर बड़ी से बड़ी कंपनी को भी इस बात की आवश्यकता रहती है कि उसका माल अधिक से अधिक मात्रा में बिके। समाचार-पत्रों में विज्ञापन देकर यह काम आसानी से किया जा सकता है।

समाचार-पत्रों द्वारा अनुकूल या प्रतिकूल प्रचार भी क्रिया जा सकता है। चुनाव के समय उम्मेदवार लोग अपने पक्ष का प्रचार करने और वोट बटोरने समाचार – पत्रों को विशेष रूप से सहारा लिया करते हैं। यह एक प्रकार से निश्चित ही है कि चुनाव में जिस उम्मेदवार का समर्थन समाचार-पत्र उत्तम रीति से करते है, वही कामयाबी हासिल करता है।

समाचार-पत्रों से लाभ यह भी होता है कि वे एक संप्रदाय, देश या राष्ट्र के प्रत्येक विषय से हमें परिचित कराते है। समाज, संप्रदाय, देश या राष्ट्र की जनता अथवा दो देशों में दोस्ती था दुश्मनी पैदा करने में ये खास हिस्सा लेते हैं।

संक्षेप में समाचार-पत्रों का कार्यक्षेत्र असीम है। इससे अनगिनत लाभ होते हैं और हानियाँ भी। हमारे देश में आजकल समाचार-पत्रों की संख्या बढ़ रही है। अगर पत्रिका-धर्म का पालन समाचार-पत्र करें तो समाज सही दिशा में आगे बढ़ सकता है।

*****

8th STD Hindi Book.indb 68 18-03-2019 17:34:10

निबंध 21 युगपुरुष गाँधी

महात्म गाँधी निश्चय ही युगपुरुष थे। उनका व्यक्तिगत जीवन ही विश्व के लिए एक अमूल्य देन है। गाँधीजी का संपूर्ण जीवन खुला पृष्ठ था जिसे कोई भी आसानी से पढ़ सकता था। उनके सारे कार्य सरल और सीदे होते थे – उनका जीवन सुन्दर था।

उनके कार्य करने के ढंग में एक खासियत थी। वे हमेशा सत्य का पक्ष लेते थे। सत्य की विजय के लिए लड़ते थे। उस लड़ाई में उनका एकमात्र अस्त्र था अहिंसा। अहिंसा उनका परम धर्म था।

महात्माजी कर्मयोगी थे। उनके सारे कर्म निष्काम थे। छोटे-से-छोटे काम से लेकर बड़े –से-बड़े क़ाम तक वे खूबी के साथ सुसुंपन्न कर सकते थे। झाड़ू निकालने से लेकर वायसराय से राजनैतिक वार्तालाप करने तक के सारे काम वे बड़ी श्रद्धा और तत्परता के साथ करते थे।

महात्माजी में एक और विशेषता यह थी कि वे सबसे बड़ी विनम्रता के साथ पेश आते थे। अपनी छोटी-सी या बड़ी भारी गलती को भी वे लोगों के सामने खुलकर स्वीकार कर लेने के लिए हमेशा तैयार थे। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि विश्वशांति की स्थापना के महान यज्ञ-कुंड में उन्होंने अपने को एक ईंधन बना दिया था जो अब तक प्रज्जवलित रहा है और आगे भी हमेशा के लिए प्रज्जवलित रहेगा।

*****

8th STD Hindi Book.indb 69 18-03-2019 17:34:10

निबंध 21 नदी

नदियों से हमें बहुत-से लाभ होते हैं। हिन्दुस्तान में ज़्यादातर लोगों के जीवन का आधार खेती है। खेती के लिए सुन्दर और उपज़ाऊ भूमि बनाने का काम नदियाँ करती है। नदियों के जल से ही आसपास के खेतों की सिंचाई होती है।

देश के भीतरी भागों में नदियाँ जल-मार्गी का काम देती हैं। इन्हीं के द्वारा व्यापार और आवागमन होता है। सड़को और स्थलमार्गों की अपेक्षा नदियों के द्वारा आने-जाने में सहूलियत होती है और व्यय भी कम पड़ता है।

नदियों के तटवर्ती प्रदेश की जलवायु स्वास्थ्यकर होती है। सुबह-शाम नदी के किनारे घूमकर दिमाग को ताज़ा किया जा सकता है और शरीर की थकान मिटायी जा सकती है। नाव में बैठकर मील-दो-मील की जलयात्रा करके खिन्न मन को नव स्फूर्तिमय बनाया ज सकता है।

नदियों के प्रवाह से पनचक्कियाँ चलायी जाती हैं। नदियों के प्रपातों (Water falls) से बिजली पैदा की जाती है।

नदियों को साफ़ रखने के उद्देश्य से हिन्दू संस्कृति में नदियों की महिमा का गान किया जाता है। इस प्रकार नदियों से माव समुदाय को अनगिनत लाभ हो रहे हैं। उन्हें साफ-सुधरा रखना हमारा कर्तव्य है।

*****

8th STD Hindi Book.indb 70 18-03-2019 17:34:10

निबंध 21 विद्यार्थी

विद्या का अर्थ है किसी वस्तु के गुणों को अच्छी तरह जानना। जो लड़का विद्या प्राप्त करता है वह विद्यार्थी कहलाता है। विद्यार्थी वही है जो किसी चरित्रवान व्यक्ति से अच्छी बातों को सीखता है, सेवा का भाव हृदय में रखता है और उत्तम स्वभाववाला होता है। जो अहंकार में फूला रहता है, वह किसी मनुष्य से कुछ नहीं सीख सकता।

विद्यार्थी को गुण लेने चाहिए, अवगुणों को छोड़ देना चाहिए। अपना मन संयमित और नियमित रखना चाहिए। दिल और दिमाग को नयी चीज़ों की विशेषताओं को जानने के लिए हमेशा खुला रखना चाहिए। उसे मेहनत – मशक्कत से घबराना नहीं चाहिए। उसमें पढ़ने-सीखने के कार्य के प्रति निष्ठा और बड़ों के प्रति सम्मान की भावना होनी चाहिए। विद्यार्थी में सरलता, सादगी स्वच्छता, पवित्रता आदि कूट-कूटकर भरी रहनी चाहिए। उसे स्वावलम्बी बनकर केवल मानसिक नहीं, बल्कि शारीरिक श्रम भी करना चाहिए।

विद्यार्थी के हृदय में नये-नये कार्यों को करने की उमंग होनी चाहिए। उसे हर स्थिति से परिचित होना है और उससे उचित फ़ायदा भी उठाना है।

विद्यार्थी का आदर्श आसमान की तरह ऊँचा होना चाहिए, सिद्धान्त हिमालय पहाड़ की तरह अटल रहना चाहिए। हृदय के भाव समुद्र की तरह अनंत और गंभीर होने चाहिए। बड़ों के प्रति श्रद्धा, भक्ति तथा निष्ठा होनी चाहिए और उसे भेद-भाव को भूलकर अपने कर्तव्य में व्यस्त रहना चाहिए। उसे अपने-पराये के पचड़े में न पड़कर सच्चा, आज्ञाकारी और सदाचारी बनना चाहिए।

*****

अन्य-निबंध

1. प्रिय कवि
2. प्रिय त्योहार
3. समय का सदुपयोग
4. पुस्तकालय
5. शिक्षक दिवस
6. भ्रमण

8th STD Hindi Book.indb 71 18-03-2019 17:34:10

22 व्याकरण भाग

वाक्य रचना

छात्रों को शुद्ध हिंदी व्याकरण ज्ञान प्रदान करना भाषा शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आठवीं कक्षा के छात्रों को वाक्य रचना सोदाहरण समझाने क़ेलिए प्रयास ही यह व्याकरण भाग है ।

1. सहायक क्रियाएँ सक, चुक, चाहिए, चाह, डाल, पड़, दे, ले, लग का प्रयोग करने सिखाना ।
2. वर्तमान कालिक कृदंतों की आवृत्ति का प्रयोग ।
3. जब, जहाँ जितना जो आदि का प्रयोग सिखाना
4. गिनती एवं भिन्नता का बोध कराना
5. महीनों का हिन्दी नाम ज्ञात कराना

8th STD Hindi Book.indb 72 18-03-2019 17:34:10

23 संयुक्त क्रियाएँ

1. जिन अवधारणा बोधक संयुक्त कियाओं (बोलना, कहना, रोना, हँसना) आदि के साथ अवधारणा - बोधक के अर्थ में 'आना' क्रिया आती है। उनके साथ बहुधा प्राणिवाचक कर्ता रहता है और वह संप्रदान कारक में आता है, जैसे उसकी सुनकर मुझे रोना आया, क्रोध में मनुष्य को कुछ न कुछ कहना आता है।

उदाहरण

I. 1. स्कूल जाने के बाद पढना आता है।

2. संगीत के अभ्यास से गाना आता है।

3. चिकित्सा के बाद बहरे को सुनना आता है।

II. आवश्यकता बोधक क्रियाओं का प्राणिवाचक उद्देश्य संप्रदान कारक में आता है और अप्राणिवाचक उद्देश्य कर्ताकारक में रहता हैं।

उदाहरण

1. मुझको जाना है।

2. आपको बैठना पडेगा।

3. सबको हिंदी सीखनी है।

III. 'चाहिए' क्रिया में कर्ता व कर्म के पुरूष और लिंग के अनुसार कोई विकार नहीं होता, परंतु कर्म के अनुसार बदल जाती है।

1. हमको हिंदी पढनी चाहिए।

2. उसको कहानी सुनानी चाहिए।

8th STD Hindi Book.indb 73 18-03-2019 17:34:10

3. रोगी को दूध पीना चाहिए ।

IV. देना अथवा पडना के योग से बनी हुई नाम बोधक क्रियाओं का उद्देश्य संप्रदान कारक से आता है ।

उदाहरण

1. मुझे शब्द सुनाई देता ।

2. गूँगे को सुनाई नहीं देता ।

3. अंधे को दिखाई नहीं पडता ।

V. लग, सक, चुक आदि संयुक्त कियाएँ भूतकालिक कृदंत से बने हुए कालों में सदैव कर्ता के अनुसार ही प्रयोग होता है ।

लग का प्रयोग

राम पढने लगा ।

सीता रोटी खाने लगी ।

राम चिट्ठी लिखने लगा ।

माँ पूरियाँ बनाने लगीं ।

'चुक' 'सक' का प्रयोग

वह पढ चुका । सीता पढ चुकी ।

पिताजी कह चुके । माँ खाना बना चुकी ।

लडके पढ चुके ।

8th STD Hindi Book.indb 74 18-03-2019 17:34:10

24 'जो' का प्रयोग

1. जो विद्वान आदमी है, उसका सब जगह आदर होता है।

2. जो देख नहीं सकता उसे अंधा कहते हैं।

3. जो किताब तुमने खरीदी है वह बहुत अच्छी है।

4. जो बात तुमको मालूम नहीं है उसके बारे में मत बोलो।

5. आप जो चाहें कर सकते हैं।

6. जिस कलम से तुम लिखते हो वह मेरी है।

7. जिस आदमी ने यह चित्र बनाया वह बड़ा होशियार होगा।

8. जिन्होंने लडाई में प्राण दिये उनके परिवार की मदद सरकार करती हैं।

9. जिन के पास गाय-भैंसे हैं उन्हें दूध की तकलीफ नहीं होती।

10. जिन जगहों पर पानी इकट्ठा होता हैं वहाँ मच्छड़ पैदा होते हैं।

1. जो लड़का आता है वह मेरा दोस्त है। (एकवचन)

2. जो लडके खेलते हैं वे मेरे स्कूल के हैं। (बहुवचन)

जो + ने = जिसने एकवचन

जो + को = जिसको

जो + से = जिनसे बहुवचन

जो + पर = जिनपर

8th STD Hindi Book.indb 75 18-03-2019 17:34:10

अभ्यास

जो, (जिस, जिन) उपयोग करके निम्नलिखित वाक्यों को बदलकर लिखे ।

1. गोपाल उस घर में रहता है । वह मेरा घर है ।

2. एक आदमी कल सभा में गा रहा था , वह मेरा दोस्त है ।

3. मैदान में एक लड़का खेल रहा है । वह सीता का भाई है ।

4. तुम्हारे पिताजी और मेरे पिताजी एक ही दफ्तर में काम करते है।

5. हरि कलम से लिखता है , वह कलम मैंने उसको दी ।

6. रहीम एक कालेज में पढता है, उसी कालेज में मेरा भाई भी पढता है ।

7. वह दूकान छोटी है, लेकिन उसका किराया बहुत है ।

8. उनका मन उदार है, उनके पास पैसा है ।

9. उन लडकियों को तुम हिन्दी सिखाते हो, वे लड़कियाँ मेरे चाचा की है ।

10. जिन्होंने तुमको रुपये दिये, उन्होंने मुझे भी रुपये दिये ।

8th STD Hindi Book.indb 76 18-03-2019 17:34:10

25 मिश्र वाक्य

जितना, जैसा, जब जहाँ जो

1. जितना तुम खा सकते हो, उतना मैं नहीं खा सकता ।

2. जितनी पुस्तकें इस पुस्तकालय में है उतनी हमारी पुस्कालय में नहीं हैं ।

3. जैसी साडियाँ बनारस में मिलती हैं वैसी साडियाँ यहाँ नहीं मिलती ।

4. जैसे राजा रहता है वैसी प्रजा भी रहती हैं ।

5. जब मैं आगरा गया तब ताजमहल को देखा ।

6. जब सवेरा होता है, तब चिडियाँ बोलने लगती हैं ।

7. जहाँ तुम जाते हो वहाँ मैं भी जाता हूँ ।

8. जहाँ नदी बहती हैं वहाँ के खेत उपजाऊ होते हैं ।

9. (जो) तुम यहाँ काम करना चाहो तो समय पर आओ ।

10. (जो) तुम व्यापार में सफलता पाना चाहो तो ईमानदार रहो ।

जब..... तब	जितना ..... उतना	जो..... तो
जहाँ ..... वहाँ	जैसा ..... वैसा	

जब, जितना, जहाँ, जैसा, जो को रखकर वाक्यो को मिलाइये ।

1. मैं घर आ रहा था, तब आपका भाई मिला ।

2. आप सोने गये, तब दस बज रहे थे ।

8th STD Hindi Book.indb 77 18-03-2019 17:34:11

3. वह वहाँ रहता है, वह जगह सुन्दर हैं ।

4. राजा राम जहाँ रहते थे , उसे अयोध्या कहते हैं ।

5. इस गाँव में बहुत लोग रहते हैं , उतने लोग उस गाँव में नहीं रहते हैं ।

6. तुम्हारे पास बहुत पैसे हैं, उतने पैसे मेरे पास नहीं हैं ।

7. चित्तूर में अच्छे आम मिलते हैं, ऐसे आम दूसरे शहर में नहीं मिलते ।

8. ऊटी में ठंड पडती हैं, वैसी ठंड यहाँ नहीं पडती ।

9. सेवा करो, अच्छा फल पा सकते हो ।

10. रोज खुली हवा में टहलो, स्वस्थ रह सकते हो।

8th STD Hindi Book.indb 78 18-03-2019 17:34:11

26 संयुक्त वाक्य

(दो या दो से अधिक सरल वाक्यों को मिला कर संयुक्त वाक्य बनाये जाते हैं। कई प्रकार के शब्दों से वाक्यों को जोड़ा जाता हैं । कुछ उदाहरण नीचे प्रस्तुत हैं ।)

1. मै घर से निकला । मैं स्कूल गया । (दो सरल वाक्य)

   मैं घर से निकलकर स्कूल गया । (संयुक्त वाक्य)

2. राम घर गया । उसने आराम किया ।

   रामने घर जाकर आराम किया ।

3. सरला की बहन की शादी थी, वह स्कूल नहीं गयी ।

   सरला की बहन की शादी थी इसलिए वह स्कूल नहीं गयी ।

4. मैं बहुत कमजोर हूँ । बोल भी नहीं पाता ।

   मैं इतना कमजोर हूँ कि बोल नहीं पाता ।

5. वह मंदिर के पास रहता है। वह मंदिर कम जाता है।

   यद्यपि वह मंदिर के पास रहता हैं, फिर भी वह मंदिर कम जाता हैं ।

6. जल्दी जाओ । गाडी पकड सकते ।

   अगर जल्दी जाओगे तो गाडी पकड सकोगे ।

7. स्कूल के पास एक मैदान हैं । लडके उस में खेलते हैं ।

   लडके स्कूल के पासवाले मैदान में खेलते हैं ।

8th STD Hindi Book.indb 79 18-03-2019 17:34:11

8. गाडी आयी थी । हम उस में जा बैठे ।

गाडी के आते ही हम उस में जा बैठे ।

9. बिल्ली ने कुत्ते को देखा । वह भाग गयी ।

कुत्ते को देखते ही बिल्ली भाग गयी ।

10. वह गरीब हैं । वह उदार है ।

गरीब होने पर भी वह उदार है।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों को मिलाकर लिखिये

1. पानी बरस रहा है । वे छत्री ले जा रहे हैं।
2. वह बड़ी सिफारिश लेकर आया । काम नहीं बना ।
3. मेरा स्कूल दूर है । मैं पैदल ही जाता हूँ ।
4. तुम मेरे साथ बंबई आना चाहते हो । जल्दी तैयार हो जाओ ।
5. किसान ने हल लिया । खेत मे गया । उसे जोता ।
6. मैं आप से मिलूँगा । फिर दिल्ली जाऊँगा ।
7. लोग गलती करते है । पुलिस दंड देती है।
8. वह बहरा है । उसे कुछ सुनाई नहीं पडता ।
9. मुसाफिर पेड के नीचे गया । थोडी देर आराम किया ।
10. गोपाल के पास पैसे नहीं थे । वह आदमी मदद नहीं कर सका ।

8th STD Hindi Book.indb 80 18-03-2019 17:34:11

27 'चाह' का प्रयोग

'चाह' का मतलब है 'पसंद' यह सहायक क्रिया के रूप में प्रयोग किया जाता है। भूतकाल में कर्म के लिंग और वचन के अनुसार 'चाह' का प्रयोग किया जाता हैं ।

छात्रों को दिये हुए उदाहरण वाक्यों को पढ़कर उसके अनुसार अभ्यास के वाक्यों का प्रयोग करना चाहिए .

उदाहरण

वर्तमान काल	भविष्य काल
मैं दस रूपये चाहता हूँ ।	मैं दस रूपया चाहूँगा ।
मैं दस रूपये देना चाहता हूँ ।	मैं दस रूपया देना चाहूँगा ।
वह दिल्ली जाना चाहता है ।	वह दिल्ली जाना चाहेगा ।
उसकी बहन कविता पढना चाहती है ।	उसकी बहन कविता पढना चाहेगी
वे हिंदी सिखाना चाहते हैं ।	वे हिंदी सिखाना चाहेंगे ।

भूतकाल

मैंने दस रूपये चाहे ।

मैने काफी पीनी चाही ।

उसने दिल्ली जाना चाहा ।

उसकी बहन ने कविता पढनी चाही ।

उन्होंने हिंदी सिखानी चाही ।

8th STD Hindi Book.indb 81 18-03-2019 17:34:11

निम्नलिखित सवालो के जवाब 'चाह' का प्रयोग करके कीजिए –

1. आप क्या करना चाहते हैं ?

2. आपने कहानी लिखनी चाही या कविता ?

3. तुमने फल खाना चाहा या रोटी खानी चाही ?

4. ये लड़कियाँ क्या चाहती हैं ?

5. छोटे लडके क्या चाहते हैं ?

6. आप ने किसको पत्र लिखना चाहा?

7. आज तुम कहाँ जाना चाहते हो?

8. उन्होंने किस भाषा में बोलनी चाही?

9. राम क्रिकट खेलना चाहता है या टेनिस?

10. आप कहाँ रहना चाहते हैं ?

8th STD Hindi Book.indb 82 18-03-2019 17:34:11

28 कर – पूर्वकालिक कृदंत का प्रयोग

मूल धातु के साथ 'कर' जोड़ना पूर्वकालिक कृदंत है।

एक कार्य करने के बाद दूसरे कार्य करने की प्रक्रिया होती है ।

उदाहरण –

1. मै राम से मिलकर आया ।
2. वे खेलकर स्कूल गये ।
3. उन्होंने रूपये देकर कहा ।
4. वह काम करके मज़दूरी माँगता है ।
5. आपकी बात सुनकर हम खुश हुए ।
6. सोचकर काम करो ।

अभ्यास

I. 'कर' का प्रयोग कर दस वाक्य लिखिए ।

II. जोडकर लिखिए

1. मैं घर जाऊँगा । फिर स्कूल आऊँगा ।
2. मैं रोज नहाऊँगा । मैं खाऊँगा ।
3. बच्चे ने माँ को देखा । वह खुश हो गया ।
4. उस फूल से सुगंध निकली । वह चारों ओर फैली ।

8th STD Hindi Book.indb 83 18-03-2019 17:34:11

5. गाय का बछडा दौडा । गाय के पास आया ।

6. तुम दिल्ली गया । संसद देखा ।

7. मैं मुंबई गया । आप चेन्नै आये ।

8. वह धन के लोभ में पडा । उसने सब खोया ।

9. लड़के स्कूल से वापस आये । वे खेले ।

10. तुम नहाओ । फिर आओ ।

8th STD Hindi Book.indb 84 18-03-2019 17:34:11

29 'सक' का प्रयोग

व्याकरण का नियम हैं कि भूतकाल में 'सक' क्रिया के वाक्य में कर्ता के साथ 'ने' नहीं जुडता । कर्ता के अनुसार ही 'सक ' का प्रयोग होगा। 'सक' क्रिया करने की क्षमता व्यक्त करने के लिए सहायक क्रिया के रूप में प्रयोग होता है। मूल धातू के बाद सभी कालों में प्रयोग कर सकते हैं ।

उदाहरण

1. मैं समुद्र में तैर सकता हूँ ।
2. तमिलनाडु के लोग हिंदी बोल सकते हैं ।
3. बूढा दस मील पैदल चल सकता है ।
4. गरीब आदमी दस रूपये देश के कल्याण के लिए दे सकता है ।
5. भगवान की कृपा से गूँगा बोल सकता है ।

अभ्यास

I. (a) 'सक' का प्रयोग कर दस वाक्य लिखिए ।

(b) उत्तर दीजिए । उत्तर में 'सक' का प्रयोग जरूरी ।

1. क्या तुम हजार रुपये दे सकते हो?
2. क्या मनुष्य पक्षी की तरह उड सकता है ?
3. क्या तुम तितली पकड सकते हो?
4. क्या तुम हिंदी में कविता लिख सकते हो?

8th STD Hindi Book.indb 85 18-03-2019 17:34:11

5. क्या वह यात्रा में आ सकता है ?

II. काल बदले बिना निम्नलिखित वाक्यों में 'सक' का प्रयोग कीजिए ।

उदाहरण - चिडिया आकाश में उडती हैं । जैसे चिड़िया आकाश में उड़ सकतीहै ।वह कविता सुनायी । जैसे वह कविता सुन सकती है ।

1. वह 1000 तिरुक्कुरल कहता है।

2. उसने एक सौ दोहे कहे ।

3. राम विदेश जाएगा ।

4. उसने मुझको नहीं पहचाना ।

5. उन्होंने राजाजी का भाषण नहीं सुना ।

6. अंधे नहीं देखते ।

7. उसने यह काम क्यों नहीं किया ।

8. क्या तुम यह घर खरीदोगे ।

8th STD Hindi Book.indb 86 18-03-2019 17:34:11

30 'चुक' का प्रयोग

'चुक' के प्रयोग के किसी काम का खतम होने का बोध होता है। इस के भूतकाल के प्रयोग में कर्ता के साथ 'ने' जोडने का नियम नहीं है। मूल-धातु के बाद सभी कालों में होता है ।

उदाहरण

1. वह एक कहानी लिख चुका ।
2. माँ रसोई बना चुकी ।
3. वे बोल चुके ।
4. वे काम कर चुके थे ।
5. मैं भी पुस्तक लिख चुका ।

8th STD Hindi Book.indb 87 18-03-2019 17:34:11

31 गिनती

अपूर्णांक

I. पाँव - ¼

सवा एक - 1¼

सवा दो - 2¼

सवा तीन - 3¼

पूर्ण अंकों के आगे “सवा” जोड़कर लिखने की प्रथा अपनावें । जैसे 3¼ सवा तीन

II. आधा - ½

डेढ - 1½

ढाई - 2½

साढे तीन - 3½

साढे चार - 4½

पूर्ण अंकों के आगे “साढे” जोड़कर जैसे 4½ साढे चार लिखने की प्रथा अपनावें।

III. पौना - ¾

पौने दो - 2¾

पौने तीन - 3¾

पौने चार - 4¾

8th STD Hindi Book.indb 88 18-03-2019 17:34:11

पूर्ण संख्या के आगे ¾ जोडकर अगली संख्या को लिखने की प्रथा अपनावें । जैसे 9¾ - पौने दस

1	एक	2	दो	3	तीन	4	चार	5	पाँच
6	छे	7	सात	8	आठ	9	नौ	10	दस
11	ग्यारह	12	बारह	13	तेरह	14	चौदह	15	पंद्रह
16	सोलह	17	सत्रह	18	अठारह	19	उन्नीस	20	बीस
21	इक्कीस	22	बाईस	23	तेईस	24	चौबीस	25	पच्चीस
26	छब्बीस	27	सत्ताईस	28	अठाईस	29	उन्तीस	30	तीस
31	इकतीस	32	बत्तीस	33	तैंतीस	34	चौंतीस	35	पैंतीस
36	छत्तीस	37	सैंतीस	38	अडतीस	39	उन्चालीस	40	चालीस
41	इक्तालीस	42	बयालीस	43	तैंतालीस	44	चवालीस	45	पैंतालीस
46	छियालीस	47	सैंतालीस	48	अडतालीस	49	उनचास	50	पचास
51	इक्कावन	52	बावन	53	तिरपन	54	चौवन	55	पचपन
56	छप्पन	57	सत्तावन	58	अठावन	59	उनसठ	60	साठ
61	इकसठ	62	बासठ	63	तिरसठ	64	चौंसठ	65	पैंसठ
66	छियासठ	67	सडसठ	68	अडसठ	69	उनहत्तर	70	सत्तर
71	इकहत्तर	72	बहत्तर	73	तिहत्तर	74	चौहत्तर	75	पचहत्तर
76	छिहत्तर	77	सतहत्तर	78	अठहत्तर	79	उन्नासी	80	अस्सी
81	इक्कासी	82	बयासी	83	तिरासी	84	चौरासी	85	पचासी
86	छियासी	87	सत्तासी	88	अठासी	89	नवासी	90	नब्बे
91	इकानबे	92	बानबे	93	तिरानबे	94	चौरानबे	95	पंचानबे
96	छियानबे	97	सत्तानबे	98	अठानबे	99	निन्यानबे	100	सौ

8th STD Hindi Book.indb 89 18-03-2019 17:34:11

32 हिंदी महीने

1. चैत्र, चैत

2. वैशाख

3. जेठ

4. आषाढ

5. श्रावण, सावन

6. भाद्रपद

7. आश्विन

8. कार्तिक

9. मार्गशीर्ष

10. पूस

11. माघ

12. फालगुण

उत्तरायण – पूस से जेठ तक

दक्षिणायण – आषाढ से मार्गशीर्ष

8th STD Hindi Book.indb 90 18-03-2019 17:34:11

33 मुहावरे

1. अंगूठा चूसना – चापलूसी करना ।

2. अंधे की लाठी – एक मात्र अवलम्ब ।

3. आँख लगना – नींद आना ।

4. आँख बिछाना – प्रेम से स्वागत करना ।

5. 'आकाश – पाताल' का अन्तर – बहुत अधिक अन्तर ।

6. एक लाठी से हाँकना – भेद भाव न रखना ।

7. कलम तोड़ना – खूब बढ़-चढ़ा कर लिखना ।

8. कान खडे होना – सचेत होना ।

9. काम तमाम करना – मार डालना ।

10. गले का हार – बडी प्यारी चीज ।

11. गुड गोबर कर देना – काम बिगाड देना ।

12. चार दिन की चाँदनी – थोडे दिन का आनन्द ।

13. नौ दो ग्यारह होना – गायब होना ।

14. पानी के भाव – बहुत सस्ता ।

15. बायें हाथ का खेल – बहुत सरल काम ।

8th STD Hindi Book.indb 91 18-03-2019 17:34:11

34 भिन्नार्थी शब्द

1	पर	-	मेज पर किताब है । चिडिया के दो पर हैं ।
2	सोना	-	सोना महँगा है । दिन में सोना बुरा है ।
3	कल	-	तुम कल यहाँ आओ । मेरा दोस्त कल यहाँ आया था ।
4	जल	-	यह पीने का जल है । दीप जल रहा है ।
5	कर	-	यह काम करो । सरकार कर डालती है ।
6	मगर	-	मगर पानी में रहता है । मैं समय पर गया, मगर गाडी नहीं मिली ।
7	दो	-	राम को फल दो मेज पर दो फल हैं ।
8	मत	-	दिन में मत सोओ । इस विषय में तुम्हारा मत क्या है ?
9	फल	-	केला मीठा फल है । परीक्षा-फल कब आएगा ?
10	उत्तर	-	प्रश्नों के सही उत्तर दो । भारत के उत्तर में हिमालय है।
11	भूल	-	आप यह बात भूल जाइए । राम, भूल मत करो ।
12	तीर	-	नदी के तीर पर मंदिर है। अर्जुन तीर चलाने में निपुण हैं ।

8th STD Hindi Book.indb 92 18-03-2019 17:34:11

35 पत्र

I. कसरत करने की जरूरत बतलाते हुए अपने छोटे भाई के नाम पर एक पत्र लिखिए।

मदुरै

15.06.19

प्रिय भाई विजय

आशा है तुम सकुशल होंगे। तुम्हारी पढ़ाई भी अच्छी चल रही होगी। पढ़ाई के साथ साथ कसरत करना भी चाहिए। कसरत करने से शरीर तंदुरुस्त बनता है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन रहता है। इसलिए कसरत करो। मां-बाप को मेरा प्रणाम। बहन को मेरा प्यार।

तुम्हारा भाई

के. राजा

पता

के विजय

11, सीताराम नगर

आगरा – 1

पोंगल त्योहार का वर्णन करते हुए मित्र को पत्र

8th STD Hindi Book.indb 93 18-03-2019 17:34:11

चेन्नै

14.07.2019

प्रिय मित्र,

नमस्ते, बहुत दिनों के बाद पत्र लिख रहा हूँ। आशा है कि तुम लोग वहाँ कुशल होंगे।

यहां पोंगल त्योहार मनाया गया है। पोंगल के दिन हम अपने गाँव गये। यह किसानों के लिए खुशी का पर्व है। गुड, नया चावल, दूध, दाल किसमिस, काजू, घी आदि चीजों से पोंगल बनाया जाता है। उस दिन सब लोगों ने नये कपडे पहने, ईख खाये और तरह-तरह के पकवान खाये।

यहाँ हम सब सानंद हैं। तुम अपना कुशल-समाचार लिखा करो।

तुम्हारा प्यार दोस्त

कृष्णराज

श्री राम

नं 100 राघव मार्ग

आगरा -1

वार्षिकोत्सव के बारे में भाई के नाम पत्र

8th STD Hindi Book.indb 94 18-03-2019 17:34:11

केरल

दि.13.08.2019

प्रिय सारथी

यहाँ मैं अपने विद्यालय के वार्षिकोत्सव में व्यस्त रहा, इसलिए पत्र लिखने में मुझे देरी हुई । मै यहाँ खुश हूँ ।

हमारे विद्यालय में बडी धूम-धाम से वार्षिकोत्सव मनाया गया था । ठीक समय पर उत्सव के अध्यक्ष डॉ.के आर. राघव और मुख्य अतिथि श्रीमति राघव विद्यालय के सभा भवन में पहुँचे । प्रधानाध्यापिका ने पुष्पमालाएँ पहनाकर उनका स्वागत किया तथा हमें उनका परिचय कराया । छात्राओं के प्रार्थना गीत गाने के बाद प्रधानाध्यापिका ने वार्षिक प्रतिवेदन पढकर सुनाया ।

विजेताओं को मुख्य अतिथि ने पुरस्कार वितरित किया । उनके विद्वता पूर्ण भाषण से सब प्रभावित हुए । उसके बाद उप-प्रधानाध्यापक ने धन्यवाद ज्ञापित किया । राष्ट्रगान के साथ उत्सव का समापन हुआ ।

प्यारा भाई, खूब परिश्रम करके पढो तथा अधिक से अधिक अंक प्राप्त करो ।

तुम्हारा भाई

कमलाकर

सेवा में

एस. सारथी

10 मुरली नगर

बंगलूर - 1

8th STD Hindi Book.indb 95 18-03-2019 17:34:11

36 मुख्य कवियों का परिचय

1. कबीर दास

कबीर दास:- भक्तिकाल के कवि थे। उनका जन्म सन् 1455 में हुआ था। नीरू और नीमा दंपत्ति ने कबीर का पालन पोषण किया था। वे मूर्ति पूजा के विरोधी थे। साखी, सबद, रमैनी कबीरदास की रचनाएँ है। जो "बीजक" नामक ग्रंथ में संग्रहित हैं। उनकी भाषा सधुक्कडी है।

2. तुलसीदास

तुलसीदास :- तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे। तुलसीदास जी का जन्म संवत् 1554 वि.मे हुआ। उनके पिता का नाम आत्मराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। बाबा नरहरिदास ने उनको शिक्षा दी। उनकी प्रमुख रचनाएँ :-

1. राम चरित मानस 2. कवितावली 3. दोहावली 4. गीतावली 5. विनय पत्रिका 6. पार्वती मंगल आदि।

3. रहीम

रहीम :- रहीम का जन्म 1556 में हुआ। बादशाह अकबर ने शिक्षा का भार लिया। संस्कृत, अरबी, फारसी आदि अनेक भाषाओं का ज्ञान उन्हें कराया। रहीम बडे दानी, परोपकारी और कृष्ण के भक्त थे। साहित्य की ओर उनकी रुचि बचपन से ही थी।

रहीम के दोहे मार्मिक है। रहीम के ग्रन्थों में रहीम दोहावली, बरवै नायिका भेद, मदनाष्टक और श्रृंगार सोरठा प्रसिद्ध है। बरवै छंद के जन्मदाता थे।

4. राम नरेश त्रिपाठी

राम नरेश त्रिपाठी :- श्री राम नरेश त्रिपाठी का जन्म 1881 में कोइरीपर, जिला जौन पुर (उत्तर प्रदेश) में हुआ। हिन्दी, अंग्रेजी, बंगला और उर्दू का ज्ञान प्राप्तकर देश

8th STD Hindi Book.indb 96 18-03-2019 17:34:11

प्रेम के आदर्शो के प्रति समर्पित रहे । उन्होंने कविता के अतिरिक्त नाट्य सृजन तथा अलोचना के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय कार्य किया । इनकी भाषा खडीबोली है। इनके काव्य में राष्ट्र प्रेम की भावना है।

5. रवींद्रनाथ टैगोर

रवींद्रनाथ टैगोर :- रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई 1861 ई.को हुआ भारतीय समाज में वे गुरूदेव हैं । रवींद्र विश्व-विख्यात कवि है। जिनकी दो रचनाएँ दो देशों का राष्ट्रगान बना ।

1. भारत का राष्ट्रगान जन, गण, मन और बंगला देश का राष्ट्रगान आमार सोनार बंगला गुरूदेव की रचनाएँ है। रवीन्द्रनाथ की कहानियाँ में काबुलीवाला, मास्टर साहब और पोस्टमास्टर आदि ।

6. श्री सोहनलाल द्विवेदी

श्री सोहन लाल द्विवेदी :- विद्यार्थी जीवन में बच्चों के लायक कविताएँ लिखते थे । बाद वे राष्ट्रीय कवि बने । उनकी भावनाओं को लेकर "युग आधार" की रचना की। कवि महात्मा गाँधी का यशोगान करते है। गाँधीजी के अनुयायी थे ।

7. सुमित्रानंदन पंत

सुमित्रानंदन पंत :- पंतजी का जन्म अलमोडा में हुआ । वे प्रकृति गायक बने । कवीन्द्र से उनको नवीन प्रेरणा मिली । समाज का निर्माण उनके साहित्य का लक्ष्य बना । विश्व को स्वर्ग के समान बनाने की कल्पना ही । जीवन को रोचक और आनन्दमय बना सकता है।

8. सुभद्रा कुमारी चौहान

सुभद्रा कुमारी चौहान :- सुभद्रा कुमारी चौहान (1905 – 1948) का जन्म प्रयाग में हुआ था । काव्य रचना की ओर इनकी प्रवृत्ति विद्यार्थी काल से थी । इनकी कविताएँ "त्रिधारा" और "मुकुल" में संकलित हैं । भाव की दृष्टि से राष्ट्र प्रेम की हैं । भाषा – शैली के अनुरूप सरलता और गति लिए हुए हैं ।

8th STD Hindi Book.indb 97 18-03-2019 17:34:11

9. भरत व्यास

भरत व्यास :- भरत व्यास का जन्म 6 जनवरी 1918 को बीकानेर में हुआ । आपकी शिक्षा चूरू में हुई । आप प्रसिद्ध फिल्मी गीतकार है। बचपन से ही आपको गीतों में रूचि था। आपके गीतों में देश भक्ति भरी थी । गीतों के द्वारा राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया है। आप प्रतिभावान कलाकार थे । आपका प्रसिद्ध नाटक रामू चनणा एवं ढोला मरवन है।

8th STD Hindi Book.indb 98 18-03-2019 17:34:11

Hindi – Std VIII

List of Authors and Reviewers

Chairperson

Dr. M. Seshan,
Professor (Retd.,)
Head of the Department. (Hindi)
D.G. Vaishnav College, Arumbakkam, Chennai.

Reviewer

Dr. Kokila P.C.,
Associate Professor (Retd.),
Head of the Department. (Hindi)
Presidency College, Chennai.

Authors

S. Anandakrishnan, M.A., M.Ed.,
Headmaster (Retd.)
The Hindu Hr. Sec. School, Triplicane, Chennai.

S. Satyanarayanan, M.A., M.Ed.,
PG Asst. in Hindi (Retd.)
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

M. Gabriel Govindaraju, M.A., B.Sc., B.Ed.,
Lecturer in Hindi (Retd.)
Navalar Nedunchezhin GHSS, Lawspet, Puducherry.

S. Muralidharan, M.A., B.Ed.,
PG Asst.,
Jawahar Higher Secondary School, Ashok Nagar, Chennai.

O.V.S. Mallika, M.A., B.Ed., M.Phil.,
B.T. Asst.,
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

R. Radjamohane, M.A., B.Ed.,
Lecturer in Hindi
Jeevanandam GHSS, Karamanikuppam,
Directorate of School Education, Puducherry.

Coordinator

K. Chandrasekaran,
Lecturer, DIET, Chennai.

Art and Design Team

Layout
Thy Designers

QC
Asker Ali

Wrapper Design
Kathir Arumugam

Co-ordination
Ramesh Munisamy

Typist
Smt. V.V. Shanthi

This book has been printed on 80 GSM Elegant Maplitho paper.

Printed by offset at:

8th STD Hindi Book.indb 99 18-03-2019 17:34:11

NOTES

8th STD Hindi Book.indb 100 18-03-2019 17:34:11

NOTES

8th STD Hindi Book.indb 101 18-03-2019 17:34:11

NOTES

8th STD Hindi Book.indb 102 18-03-2019 17:34:11

NOTES

8th STD Hindi Book.indb 102 18-03-2019 17:34:11

NOTES

8th STD Hindi Book.indb 102 18-03-2019 17:34:11